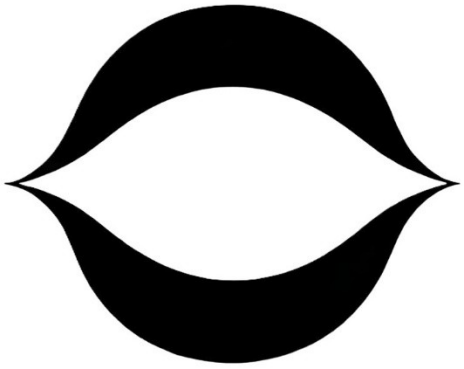

धर्म के बाद अस्तित्व

बिना सहारे के दयालुता की संरचना

शरीर सही होने का दावा नहीं करता।

शरीर केवल यहाँ होने का दावा करता है।

विषय-सूची

कलाकार की टिप्पणी 4

दिशा-निर्देश 6

परिचय 7

भाग I — आधार

1 — अनदेखी छलांग 9

2 — संसार के भीतर ईश्वर 13

3 — एक वस्तु, अनेक रूप 17

4 — दयालुता संरचनात्मक क्यों है 21

भाग II — सहारा

5 — वास्तुकला 28

6 — पाठ में छुपी धार 34

7 — तंत्र 40

8 — अभिलेख 48

9 — प्रति-परीक्षण 71

10 — क्या तुम्हें यकीन है? 73

भाग III — नैतिकता

11 — बिना हठधर्मिता के अर्थ 80

12 — अंतिम नैतिकता 84

13 — बिना आत्म-धार्मिकता के सुधार 90

14 — दिशासूचक के रूप में शरीर 93

15 — अपर के बिना जीवन 97

कलाकार की टिप्पणी

मेरा मानना है कि धर्म के बिना एक दुनिया केवल बेहतर नहीं है। यह आवश्यक है।

इसलिए नहीं कि धार्मिक लोग समस्या हैं। वे नहीं हैं।

मस्जिद में नमाज़ पढ़ने वाला व्यक्ति मैं हूँ। मठ में भिक्षु मैं हूँ। दीवार पर खड़ा रब्बी मैं हूँ। मदरसे में बच्चा मैं हूँ।

हम सब एक ही इमारत की खिड़कियाँ हैं। हर खिड़की। हर दृश्य।

समस्या सहारा है — वह वास्तुशिल्पीय निर्णय जो नैतिकता को एक ऐसे अधिकार से निकालता है जिसकी व्याख्या की जा सकती है, और फिर उसे दूसरों पर थोपता है।

समस्या संरचनात्मक है, व्यक्तिगत नहीं।

मैं बहुत लंबे समय से वही प्रश्न पूछता रहा हूँ। क्या हम वाकई अलग हैं?

मैं दुनिया को देखता हूँ और देखता हूँ कि एक धारणा कितना नुकसान कर रही है — वह धारणा कि तुम और मैं सबसे बुनियादी स्तर पर अलग हैं।

धर्म उस छँटाई का सबसे शक्तिशाली, सबसे स्थायी, सबसे परिणामकारी मूर्तरूप है।

इसकी कीमत, दो हज़ार वर्षों में, करोड़ों शवों में मापी जाती है। कीमत अभी भी बढ़ रही है।

यह पुस्तक उस कीमत को दृश्यमान बनाने का प्रयास है, यह दिखाने के लिए कि यह संरचनात्मक है न कि आकस्मिक, और यह वर्णन करने के लिए कि इसके बाद क्या आता है।

शून्यवाद नहीं। रिक्तता नहीं।

एक ऐसी दुनिया जो अधिक करुणामय, अधिक दयालु, असीम रूप से कम क्रूर, और निश्चित रूप से अधिक ईमानदार है।

कोई भी किसी और से अधिक विशेष नहीं है।

कोई भी सूरज के अधिक निकट नहीं खड़ा है।

हम सब बस रेगिस्तान में रेत के कण हैं।

यह पुस्तक आपसे कहती है कि एक प्रश्न के साथ ईमानदारी से बैठें, और देखें कि वह कहाँ ले जाता है।

क्या हम वाकई अलग हैं?

— G

दिशा-निर्देश

This is a standalone book in The 420 Code corpus. It is the direct complement to The Illusion of the Other, which was the first book I ever wrote — the gentle door. This book is the complete walk-through.

Behind it stands over a million words of formal derivation, forty-two Artist's Proofs, and 258 kill switches — specific, stated, falsifiable conditions under which every claim dies. The formal work exists. It is published free, forever, at the420code.org.

The reader does not need any of that. This book earns its own case within its own pages. Every term from the formal work is defined where it appears. The references to the420code.org are invitations, not dependencies.

पुस्तक तीन भागों में है।

भाग I स्थापित करता है कि हम क्या हैं — कोई भी सहारा खड़ा होने से पहले, एक वस्तु जो अनेक के रूप में प्रकट होती है।

भाग II दिखाता है कि सहारे की क्या कीमत है — संरचनात्मक, ऐतिहासिक और शरीर में।

भाग III वर्णन करता है कि उसके बाद क्या आता है — धर्म के बाद की दुनिया में जीने का व्यावहारिक दृष्टिकोण।

हर भाग अगले को अर्जित करता है।

सबसे गहरा दावा — कि हम एक हैं — अपना स्वयं का किल स्विच रखता है। यदि यह विफल होता है, तो नैतिकता स्वतंत्र आधार पर टिकी रहती है।

अंत तक, निष्कर्ष आश्चर्य जैसा नहीं लगना चाहिए।

यह ऐसा लगना चाहिए जैसे कुछ जो आप हमेशा जानते थे और अब, अंततः, स्पष्ट रूप से कहा जा रहा सुन रहे हैं।

परिचय

एक धारणा मानव इतिहास में सबसे अधिक नुकसान करती है।

वह धारणा कि तुम और मैं सबसे बुनियादी स्तर पर अलग हैं।

यह धारणा स्पष्ट लगती है। तथ्य जैसी लगती है।

लेकिन यह तथ्य नहीं है।

यह एक जीवित रहने का उपकरण है जिसे हम भूल गए कि यह उपकरण है।

शरीर भीतर और बाहर के बीच एक रेखा खींचता है। मन एक कहानी जोड़ता है। भाषा उसे स्थिर करती है। समूह उसे बड़ा करता है।

धर्म ईश्वर को दुनिया के बाहर रखता है। अधिकार का एक पदानुक्रम प्रस्तुत करता है। ऐसे ग्रंथ उत्पन्न करता है जिनमें धार और छत दोनों होती हैं।

परिणाम, दो हज़ार वर्षों में, करोड़ों शवों में मापा जाता है।

यह पुस्तक जाँचती है कि ऐसा क्यों हुआ — धार्मिक लोगों की विफलता के रूप में नहीं, बल्कि वास्तुकला की विफलता के रूप में। और प्रस्तावित करती है कि इसकी जगह क्या ले।

इस पुस्तक का निष्कर्ष कोई नई आज्ञा नहीं है। यह एक संरचनात्मक व्युत्पत्ति है — परीक्षित, खंडनीय, और पुनर्व्याख्या से सदा मुक्त।

भाग I

आधार

हम क्या हैं, कोई भी सहारा खड़ा होने से पहले।

अध्याय 1

अनदेखी छलांग

व्यक्ति जीवन में एक शांत, निरंतर अनुभूति के साथ चलता है। मैं यहाँ हूँ, अपनी आँखों के पीछे, अपनी त्वचा के भीतर। बाकी सब बाहर है।

एक मैं हूँ। और एक मैं नहीं हूँ।

यह अनुभूति इतनी स्पष्ट है कि लगभग कोई इस पर प्रश्न नहीं उठाता। यह स्वयं को तथ्य के रूप में प्रस्तुत करती है, व्याख्या के रूप में नहीं।

यह पहली चीज़ है जो मैं जानता हूँ और आखिरी चीज़ जिस पर मैं संदेह करता हूँ।

लेकिन एक प्रश्न पूछने योग्य है। एक सरल प्रश्न, और यह सब कुछ बदल देता है।

क्या अलगाव मेरे अस्तित्व के बारे में बुनियादी सत्य है? या यह वह तरीका है जिससे चीज़ें वहाँ से दिखती हैं जहाँ मैं खड़ा हूँ?

सबसे सरल कारण कि मैं अलग महसूस करता हूँ, मेरा शरीर है।

मेरा तंत्रिका तंत्र जीवित रहने के लिए बना है।

यह खतरों और अवसरों का मानचित्र बनाता है। जानता है कि क्या जीव का है और क्या नहीं। भूख यहाँ महसूस होती है। दर्द यहाँ महसूस होता है।

जीवित रहने के दृष्टिकोण से, दुनिया को "मैं" और "मैं नहीं" में बाँटना पूरी तरह समझदारी है।

अलगाव कोई गलती नहीं है। यह एक जीवन-रक्षा रणनीति है।

लेकिन रणनीति सत्य के समान नहीं है।

नक्शा उपयोगी है। नक्शा भूभाग नहीं है।

शरीर की रेखा के ऊपर, मन एक कथावाचक जोड़ता है।

मेरे पास संवेदनाएँ, स्मृतियाँ, भय, आदतें, आशाएँ हैं, और मैं उन्हें एक चरित्र में बुनता हूँ।

यह मैं हूँ। यह मेरा जीवन है। यही मुझे चिंतित करता है। इससे मुझे डर लगता है।

कहानी उपयोगी है। निरंतरता बनाती है। मुझे सीखने, योजना बनाने, ज़िम्मेदारी लेने देती है।

लेकिन यह इस भावना को भी मज़बूत करती है कि आत्म एक वस्तु है — एक ठोस पदार्थ जो अन्य ठोस पदार्थों की दुनिया में चल रहा है।

जब हम "मैं" कहते हैं, तो क्या हमें यकीन है कि हमारा क्या मतलब है? शरीर? व्यक्तित्व? मन? मन के पीछे कुछ?

हम निश्चित नहीं हैं क्योंकि "मैं" की भावना पहले से तैयार पहुँचती है। यह स्वयं को स्वतःसिद्ध के रूप में प्रस्तुत करती है।

एक बार जब वह केंद्र मान लिया जाता है, तो बाकी सब "अपर" बन जाता है।

———

यदि शरीर रेखा खींचता है और मन उसे मज़बूत करता है, तो भाषा उसे स्थायी बना देती है।

भाषा चीज़ों को नामित टुकड़ों में बाँटकर काम करती है।

पेड़। आकाश। व्यक्ति। अजनबी। मेरा। तुम्हारा।

ये विभाजन उपयोगी हैं। इनके बिना, मैं संवाद, सहयोग या स्पष्ट रूप से सोच नहीं सकता।

लेकिन उपयोगिता चुपचाप भ्रम में बदल सकती है।

क्योंकि भाषा बाँटती है, यह विभाजन को वास्तविकता की मूलभूत प्रकृति जैसा बना सकती है।

शब्द आवश्यक हैं। लेकिन वे अलगाव का सुझाव दे सकते हैं जहाँ केवल जुड़ाव है।

———

अलगाव व्यक्तिगत नहीं रहता। सामाजिक बन जाता है।

हम समूह बनाते हैं। पहचान विरासत में पाते हैं। "हम" और "वे" के बीच रेखाएँ खींचते हैं।

यह प्राचीन है, और हमेशा हानिकारक नहीं। समुदाय पोषक हो सकता है। साझा संस्कृति अपनापन पैदा करती है।

समस्या तब शुरू होती है जब अंतर दूरी बन जाता है — जब "मुझ जैसा नहीं" "मुझसे कम" में बदल जाता है।

उस बिंदु पर, सहानुभूति वैकल्पिक हो जाती है। दूसरे व्यक्ति का आंतरिक जीवन हमारी दृष्टि से ओझल हो जाता है।

यह आमतौर पर स्वयं को क्रूरता के रूप में प्रस्तुत नहीं करता।

यह स्वयं को तर्कसंगतता के रूप में प्रस्तुत करता है। "वे हमसे अलग हैं।" "वे हमारे मूल्य साझा नहीं करते।"

ये वाक्य शांति से कहे जाते हैं। यही उन्हें शक्ति देता है।

———

शरीर, कहानी, भाषा और समूह के नीचे, एक क़दम है जो लगभग कोई स्वयं को उठाते हुए नहीं पकड़ता।

मैं इससे *मैं स्वयं को अलग अनुभव करता हूँ* इसमें *मैं मूलभूत रूप से अलग हूँ।*

वह क़दम स्वाभाविक लगता है। लेकिन यह अनिवार्य नहीं है।

अनुभव दृष्टिकोण द्वारा आकार लेता है। दृष्टिकोण डिज़ाइन से सीमित है। लेकिन सीमितता का अर्थ अलगाव नहीं है।

जब मैं सूर्योदय देखता हूँ, वह बाहरी लगता है। लेकिन प्रकाश मेरी आँखों में प्रवेश करता है, विद्युत संकेत बनता है, अनुभव बनता है।

जब मैं साँस लेता हूँ, संसार कहाँ समाप्त होता है और मैं कहाँ शुरू होता हूँ?

एक पूर्णतया स्वतंत्र आत्म खोजना कठिन है।

इसलिए पहला क़दम बस बौद्धिक ईमानदारी है: अलगाव एक अनुभव है। यह इस बारे में अंतिम शब्द नहीं हो सकता कि मैं क्या हूँ।

———

सीमाएँ मौजूद हैं। शरीर में त्वचा है। अवधारणाओं की परिभाषाएँ हैं। ये सीमाएँ उद्देश्यों की पूर्ति करती हैं।

लेकिन उपयोगी सीमाओं को आसानी से अंतिम मान लिया जाता है।

कोशिका में झिल्ली है, फिर भी वह केवल अपने परिवेश के साथ आदान-प्रदान से अस्तित्व में है। व्यक्ति का शरीर है, फिर भी वह केवल दूसरों के साथ आदान-प्रदान से अस्तित्व में है।

सीमाएँ जो मौजूद है उसे व्यवस्थित करती हैं। वे इसे अस्तित्व के अलग-अलग प्रकारों में विभाजित नहीं करतीं।

मैं रेत में एक रेखा खींच सकता हूँ बिना रेत के दो अलग पदार्थ बने। रेखा वास्तविक है। रेत एक है।

यदि यह सत्य है — यदि वास्तविकता एक वस्तु है जो अनेक के रूप में प्रकट होती है — तो इससे क्या निकलता है?

उस सुधार का शब्द है एकता।

समरूपता नहीं। अंतर का मिटाना नहीं।

बस यह पहचान कि भिन्नता के लिए वियोग आवश्यक नहीं है।

एक बार यह दिख जाए, तो मैं दुनिया के बारे में क्या मानता हूँ और दूसरों से कैसा व्यवहार करता हूँ, के बीच का संबंध अपरिहार्य हो जाता है।

अध्याय 2

संसार के भीतर ईश्वर

ईश्वर क्या है, यह पूछने से पहले, यह समझना उपयोगी है कि ईश्वर को कहाँ रखा गया। और इसे कोमलता से समझना — क्योंकि बहुतों का इस स्थान से वास्तविक रिश्ता है।

जो अनुसरण करता है वह उस रिश्ते पर हमला नहीं है।

यह एक वास्तुशिल्पीय निर्णय की जाँच है, और उस निर्णय की क्या कीमत रही।

प्रारंभिक मानव इतिहास के अधिकांश भाग में, पवित्रता को दूरस्थ अनुभव नहीं किया गया। यह तत्काल था। प्रकृति शक्तियों का एक जीवित क्षेत्र था।

पवित्रता हर चीज़ में बुनी हुई थी, इससे पहले कि उसे हर चीज़ से ऊपर उठाया गया।

———

जैसे-जैसे समुदाय बढ़े, उनकी व्याख्याएँ भी बढ़ीं।

जो शक्तियों के जीवित क्षेत्र जैसा लगता था, धीरे-धीरे व्यक्तिगत हो गया। गरज एक देवता बन गई। उर्वरता एक देवी बन गई।

पवित्रता को मानवीय चेहरा देने से दुनिया परिचित हो गई।

इसने उसे शासन-योग्य भी बना दिया।

एक बार जब पवित्रता को इच्छा रखने वाला माना गया, तो वह आदेश दे सकता था। और आदेश से आज्ञापालन, और आज्ञापालन से सत्ता आई।

समय के साथ, ईश्वर ऊपर की ओर गया।

ईश्वर को ऊपर, पार, बाहर समझा जाने लगा।

पवित्रता अब अस्तित्व में बुनी नहीं थी।

वह उस पर शासन करने लगी।

———

जब ईश्वर को संसार के बाहर रखा जाता है, एक विभाजन प्रस्तुत होता है।

सृष्टिकर्ता यहाँ, सृष्टि वहाँ।

यह सहज लगता है। कुम्हार बर्तन नहीं है।

लेकिन उपमा वहाँ टूटती है जहाँ यह मायने रखती है।

कुम्हार बर्तन से स्वतंत्र रूप से अस्तित्व में है।

यदि ईश्वर को वह समझा जाए जिस पर सब कुछ निर्भर है — जो परम है — तो ईश्वर संसार के साथ उसी संबंध में नहीं खड़ा हो सकता।

एक बार जब ईश्वर को प्राणियों में एक प्राणी माना गया — भले ही सर्वोच्च — कुछ निर्णायक होता है।

ईश्वर एक चीज़ बन जाता है, और बाकी सब कुछ दूसरी चीज़।

एकता की जगह दूरी ले लेती है।

भागीदारी की जगह आज्ञापालन ले लेता है।

पवित्रता अब अस्तित्व की भूमि नहीं रहती।

यह विश्वास का विषय बन जाती है।

———

एक बार जब ईश्वर बाहरी हो जाता है, ईश्वर तक पहुँच मध्यस्थता से होनी चाहिए।

ईश्वर का ज्ञान कहीं से आना चाहिए — धर्मग्रंथ, सिद्धांत, पुरोहितवाद, परंपरा।

सत्य कुछ ऐसा बन जाता है जो दिया जाता है, खोजा नहीं।

नैतिकता कुछ ऐसी बन जाती है जो आदेशित होती है, समझी नहीं।

व्यक्ति का कार्य एक बाहरी इच्छा के साथ संरेखण बन जाता है, न कि इस स्पष्टता कि वास्तव में क्या हो रहा है।

अब एक व्यक्ति ईमानदारी से और बिना द्वेष के कह सकता है: ईश्वर से मेरा रिश्ता सही है, इसलिए मेरे कार्य उचित हैं।

इसके लिए क्रूरता की आवश्यकता नहीं।

इसके लिए निश्चितता की आवश्यकता है।

———

इस बदलाव में कुछ आवश्यक खो गया — जानबूझकर नहीं, बल्कि संरचनात्मक रूप से। बुरे लोगों द्वारा नहीं। हम सबके द्वारा, धीरे-धीरे।

जो खो गया वह यह भावना थी कि अस्तित्व स्वयं पवित्र है।

जब ईश्वर बाहरी है, संसार अस्थायी हो जाता है।

यह जीवन भागीदारी के बजाय परीक्षा बन जाता है। पवित्रता स्थगित हो जाती है — स्वर्ग, परलोक, न्याय के दिन तक।

और जब पवित्रता स्थगित हो जाती है, पीड़ा सहना आसान हो जाता है। इसलिए नहीं कि किसी ने क्रूर होना चुना। क्योंकि संरचना ने अनुमति दी।

यह जीवन अस्थायी है। यहाँ की पीड़ा मुद्दा नहीं है।

वह सुझाव क्रूर लोगों ने नहीं बनाया। दयालु लोगों ने विरासत में पाया।

यही संरचनात्मक कीमत है। क्रूरता नहीं। कुछ शांत।

दूसरी ओर देखने की अनुमति।

———

यदि ईश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ और सर्वव्यापी है — तो ईश्वर ठीक किसके बाहर है?

यदि सब कुछ से परे कुछ नहीं है, तो ईश्वर को सब कुछ के बाहर रखना अर्थहीन है।

यदि ईश्वर हर जगह है, तो ईश्वर कहीं और नहीं है।

बाहरी ईश्वर पर हमला करने की आवश्यकता नहीं। वह चुपचाप अपने ही विवरणों के भार तले असंगत हो जाता है।

बाहरी ईश्वर को अस्वीकार करने का अर्थ सब कुछ को मृत पदार्थ में बदलना नहीं है।

अंतर्निवास ईश्वर को नकारता नहीं।

यह दूरी को नकारता है।

कहता है कि ईश्वर जो मौजूद है उससे अलग नहीं है। शासक या न्यायाधीश की तरह अलग खड़ा नहीं।

ईश्वर अस्तित्व से अभिन्न है — कविता के रूप में नहीं, बल्कि सबसे सरल विवरण के रूप में जो समझ में आता है।

यदि यह सही है, तो संसार ईश्वर द्वारा बनाकर चलने दी गई वस्तु नहीं है। यह ईश्वर क्या है इसकी निरंतर अभिव्यक्ति है।

और मैं — इसके भीतर एक चेतन प्राणी — दर्शक नहीं हूँ। मैं वह संसार हूँ जो स्वयं के प्रति जागरूक हो रहा है।

मैं ब्रह्मांड में नहीं आया। मैं इससे निकला।

ब्रह्मांड भी मैं है।

अध्याय 3

एक वस्तु, अनेक रूप

यदि संसार एक वस्तु है, तो यह अनेक वस्तुओं जैसा क्यों दिखता है?

यह एक ईमानदार प्रश्न है।

एकता जो अंतर का हिसाब नहीं दे सकती, बेकार है।

कार्य विविधता या व्यक्तित्व या भिन्नता को नकारना नहीं है। यह समझना है कि वे कैसे उत्पन्न होती हैं।

एक रेगिस्तान पर विचार करो।

यह वास्तविक है। तुम इसमें खड़े हो सकते हो। तुम इसे पार कर सकते हो। लेकिन यह किससे बनी है?

रेत के कण, ताप, हवा, समय, और उनके बीच के संबंध।

रेगिस्तान रेत के ऊपर मँडराती कोई अतिरिक्त वस्तु नहीं है।

यह समग्र द्वारा निर्मित पैटर्न है।

हर कण विशिष्ट है। हर कण का एक स्थान, एक आकार, एक इतिहास है। कोई कण उस रेगिस्तान से अलग अस्तित्व नहीं रखता जिसने उसे उत्पन्न किया।

कण वास्तविक है। रेगिस्तान वास्तविक है।

उनके बीच का अलगाव वास्तविक नहीं है।

गलती कणों को देखना नहीं है।

गलती यह निष्कर्ष निकालना है कि कण रेगिस्तान से अलग अस्तित्व रखते हैं।

एकता का अर्थ समरूपता नहीं है।

दो व्यक्ति एक ही आधार साझा कर सकते हैं जबकि अभिव्यक्ति में पूर्णतया भिन्न हों।

स्वभाव, क्षमता, विश्वास, संस्कृति, परिस्थितियाँ — ये अनंत रूप से भिन्न हैं। ये भिन्नताएँ हल की जाने वाली समस्याएँ नहीं हैं।

एकता जो नकारती है वह अंतर नहीं, बल्कि पूर्ण अलगाव है।

विशिष्ट होने और अलग होने के बीच एक रेखा है।

———

व्यक्ति सीमित है।

यह विवादास्पद नहीं है। हर कोई एक विशेष स्थान और समय में है। सीमित ज्ञान, सीमित शक्ति, सीमित दृष्टिकोण।

लेकिन सीमितता का अर्थ महत्वहीनता नहीं।

एक शब्द एक जीवन बदल सकता है। दयालुता का एक कार्य एक दिन, एक वर्ष, एक परिवार की दिशा बदल सकता है।

रूप में विशिष्ट होना मूल्य में कम होना नहीं है। यह उस एक चीज़ में सक्षम होना है जो समग्र अकेला नहीं कर सकता।

लहर सागर की मालिक नहीं है। लेकिन वह उससे अलग नहीं है।

व्यक्ति संसार, सत्य या ईश्वर का मालिक नहीं है।

जागरूकता समग्र पर अधिकार नहीं देती। वह उसमें भागीदारी देती है।

कोई केंद्र में नहीं खड़ा। सभी भागीदार हैं। और भागीदारी कोई कम भूमिका नहीं है।

यही एकमात्र भूमिका है।

———

यदि हर चेतन प्राणी एक ही समग्र की अभिव्यक्ति है, तो समानता कोई नीति नहीं है। यह एक तथ्य है।

यह समानता बुद्धि, नैतिकता, विश्वास या व्यवहार पर निर्भर नहीं करती। यह इन सबसे पहले आती है।

कोई भी स्रोत के अधिक निकट नहीं है।

इमारत में किसी खिड़की को सूरज का बेहतर दृश्य नहीं मिला।

———

यदि हम सब एक चीज़ की अभिव्यक्तियाँ हैं, तो चुनाव का क्या अर्थ है? तुमने यहाँ तक पढ़कर पहले ही एक कर लिया।

वह प्रतिक्रिया — विचार करने, तौलने, समायोजित करने की क्षमता — एकमात्र स्वतंत्रता है जो कभी अस्तित्व में रही। और यह पर्याप्त है।

स्वतंत्रता असीमित चुनाव नहीं है। यह प्रतिक्रियाशीलता है।

पहाड़ी से लुढ़कते पत्थर के पास कोई विकल्प नहीं। वह गुरुत्वाकर्षण का पालन करता है। पहाड़ी पर चलने वाला व्यक्ति रुक सकता, मुड़ सकता, बैठ सकता, या दिशा बदल सकता है।

चुनाव कारणों से मुक्ति नहीं है।

यह कारणों को कैसे अपनाया और व्यक्त किया जाए, उसे आकार देने की क्षमता है।

———

जुड़ी हुई दुनिया में, शक्ति अलगाव में नहीं रखी जाती।

क्योंकि मेरे कार्य मुझसे अधिक को प्रभावित करते हैं, ज़िम्मेदारी गहरी होती है, गायब नहीं होती।

एकता हानि को क्षमा नहीं करती। यह बताती है कि हानि को सीमित क्यों नहीं किया जा सकता।

नैतिक विकास कठोर नियमों का आज्ञापालन नहीं है। यह स्पष्टता की क्रमिक वृद्धि है।

जैसे-जैसे समझ गहरी होती है, व्यवहार समायोजित होता है।

हानि का औचित्य सिद्ध करना कठिन हो जाता है — इसलिए नहीं कि यह निषिद्ध है, बल्कि इसलिए कि यह अब मेरी समझ के अनुरूप नहीं है।

मुझे हर स्थिति के लिए नया नियम नहीं चाहिए। मुझे स्पष्ट अंतर्दृष्टि चाहिए। शेष स्वयं आता है।

अध्याय 4

दयालुता संरचनात्मक क्यों है

इस बिंदु पर, आधार बदल चुका है।

कोई आदेश नहीं दिया गया। किसी अधिकार का आह्वान नहीं किया गया। किसी भय या पुरस्कार की अपील नहीं की गई।

जो जाँचा गया वह यह है कि जब अलगाव को अंतिम सत्य नहीं माना जाता तो दुनिया कैसी दिखती है।

यह अध्याय वह निष्कर्ष निकालता है जो इससे आता है।

यह वह निष्कर्ष है जिसे आप पहले से अनुभव करते हैं। इसे थोपने की आवश्यकता नहीं। बस स्पष्ट रूप से कहने की।

यदि संसार एक है, यदि चेतन प्राणी उसकी अभिव्यक्तियाँ हैं, और यदि कर्म साझा क्षेत्र से होकर यात्रा करते हैं — तो दयालुता कोई वरीयता नहीं है।

यह सही ढंग से समझी गई दुनिया की सबसे स्पष्ट प्रतिक्रिया है।

अधिकांश नैतिक प्रणालियाँ नियमों से शुरू होती हैं।

यह करो। वह मत करो। इस अधिकार का पालन करो। इस दंड से बचो।

नियम व्यवहार को नियंत्रित कर सकते हैं। शायद ही कभी समझ बदलते हैं।

नियमों का यांत्रिक रूप से पालन किया जा सकता है, रणनीतिक रूप से प्रतिरोध किया जा सकता है, या असुविधाजनक होने पर अनदेखा किया जा सकता है।

समझ अलग तरह से काम करती है।

जब कोई स्थिति स्पष्ट रूप से समझी जाती है, कुछ कार्य बस समझ में आने बंद हो जाते हैं।

करुणा भी उसी तरह काम करती है।

यह आदेशित नहीं है। यह स्पष्ट रूप से देखने से आती है।

———

यदि दूसरा व्यक्ति मुझसे मूलभूत रूप से अलग है, तो हानि का औचित्य सिद्ध किया जा सकता है।

लेकिन यदि दूसरा व्यक्ति सार में अलग नहीं है — यदि मैं और वे एक ही संसार की अभिव्यक्तियाँ हैं — तो हानि कोई बाहरी कार्य नहीं है।

एक ही संसार साझा करते हुए दूसरे को नुकसान पहुँचाना ऐसा है जैसे मेरा बायाँ हाथ मेरे दाहिने पर हमला करे।

प्रहार त्वचा के दोनों ओर पड़ता है।

———

क्रूरता महँगी है। केवल नैतिक रूप से नहीं। संरचनात्मक रूप से।

यह विश्वास तोड़ती है। संघर्ष बढ़ाती है। पीड़ा गुणा करती है।

दयालुता, इसके विपरीत, कुशल है। यह कम-घर्षण व्यवहार है।

यह प्रतिरोध कम करती है। प्रणालियों को स्थिर करती है।

यह भावुकता नहीं है। यह अवलोकन है।

दुनिया बेहतर काम करती है जब लोग उसे तोड़ नहीं रहे होते।

———

करुणा को अक्सर कमज़ोरी समझ लिया जाता है। समर्पण। हानि सहन करना।

यहाँ करुणा कुछ और ही है।

यह कार्य पर लागू स्पष्टता है।

इसमें पसंद की आवश्यकता नहीं। सहमति की आवश्यकता नहीं। पहचान की आवश्यकता है।

यह पहचान कि दूसरा व्यक्ति उस संसार से बाहर नहीं है जिसमें मैं और तुम शामिल हो।

शल्य चिकित्सक चीरा लगाता है ठीक करने के लिए। माता-पिता ना कहते हैं बचाने के लिए।

करुणा सीमाओं को समाप्त नहीं करती। उन्हें सूचित करती है।

———

जो तुमने अभी पढ़ा वह केवल दर्शन नहीं है। यह व्युत्पन्न है।

इस पुस्तक के पीछे एक औपचारिक कार्य है जो यहाँ कही गई हर बात को एक आधारवाक्य से, चार स्वयंसिद्धों के माध्यम से, खंडनीय गणित का उपयोग करके व्युत्पन्न करता है।

जो अनुसरण करता है वह आधार है। इतना सरल कि एक वाक्य में कहा जा सके। इतना मज़बूत कि इसके ऊपर बने हर चीज़ का भार उठा सके।

आधारवाक्य है: एक अभिलेख अस्तित्व में है।

वह वाक्य बहुत कम लगता है। किसी चीज़ की नींव बनने के लिए बहुत सरल।

प्रयास करो। कहो: कुछ भी अस्तित्व में नहीं है।

यह कहने के लिए एक वक्ता चाहिए। एक क्षण। एक भाषा। एक विचार। इनमें से प्रत्येक एक अभिलेख है। नकार ही प्रमाण है।

यह कोई चाल नहीं है। यह तार्किक फ़र्श है।

जो भी कथन कभी कहा गया, जो भी संदेह कभी उठाया गया, जो भी प्रश्न कभी पूछा गया, सब पहले से मान लेते हैं कि कम से कम एक अभिलेख अस्तित्व में है।

आधारवाक्य को विश्वास की आवश्यकता नहीं। केवल यह कि कुछ — कुछ भी — हो रहा है।

और कुछ हो रहा है। तुम यह वाक्य पढ़ रहे हो। वह एक अभिलेख है।

From this one premise — the only premise that cannot be false — the formal work derives four axioms. From those axioms, it derives physical constants and a terminal ethic. The physics and the ethics come from the same place. They are not neighbours. They are siblings. The full derivation is walked through in Chapter 12. The formal work is called The 420 Code, and it is free, forever, at the420code.org.

———

जारी रखने से पहले एक ईमानदार प्रकटीकरण।

हर चेतन प्राणी एक ही चीज़ की अभिव्यक्ति है — यह इस पुस्तक का सबसे उजागर दावा है।

यह पहचान से शुरू होता है, प्रमाण से नहीं। औपचारिक कार्य में इसका एक विशिष्ट किल स्विच है।

लेकिन नैतिकता इसके साथ नहीं गिरती।

उसी निष्कर्ष तक एक दूसरा मार्ग है।

इसमें किसी तत्वमीमांसा की आवश्यकता नहीं। केवल दो चीज़ें, और दोनों मापनीय हैं।

पहला: मेरा जीवन तुम्हें प्रभावित करता है और तुम्हारा मुझे। हम जुड़े हुए हैं। दूसरा: बहाव अपरिवर्तनीय है।

बहाव का अर्थ: चीज़ें अपने आप अपरिवर्तनीय रूप से घिसती हैं। प्याला ठंडा होता है। गलियारा संकरा होता है। समय पलटता नहीं।

केवल इन दो तथ्यों से — कोई एकता का दावा नहीं, कोई खिड़कियाँ नहीं, कोई इमारत नहीं — वही ज्यामिति वही परिणाम उत्पन्न करती है।

क्रूरता दोनों गलियारों को सिकोड़ती है। उदासीनता उन्हें संकरा होने देती है। केवल दयालुता उन्हें बचाती है।

अंतिम नैतिकता टिकी रहती है — इसलिए नहीं कि हम एक हैं, बल्कि इसलिए कि हम जुड़े हुए हैं और समय पलटता नहीं।

पहचान नैतिकता को सुंदर बनाती है। ज्यामिति उसे सत्य बनाती है। यदि चुनना पड़े, ज्यामिति चुनो।

———

हर व्यक्ति का एक गलियारा है — वे भविष्य जो अभी भी वहाँ से पहुँचने योग्य हैं जहाँ वह अभी खड़ा है।

गलियारा अपने आप संकरा होता है। बहाव डिफ़ॉल्ट है।

और जब दो व्यक्ति जुड़े होते हैं, साथ काम करना दोनों के लिए जगह बढ़ाता है।

दयालुता वह व्यवहार है जो दोनों गलियारों को खुला रखता है।

ज्यामिति तुम्हारे इरादों की परवाह नहीं करती।

वह तुम्हारे प्रभाव को मापती है।

———

यही आधार है।

एक वस्तु जो अनेक के रूप में प्रकट होती है। रेगिस्तान में कण। सागर में लहरें। दयालुता एकमात्र स्थिर व्यवहार। करुणा सबसे स्पष्ट प्रतिक्रिया।

यही हम हैं, कोई भी सहारा खड़ा होने से पहले।

और यह वह प्रश्न है जो आधार तुमसे पूछने को मजबूर करता है।

यदि दयालुता संरचनात्मक है, तो मानव इतिहास की क्रूरता को स्पष्टीकरण चाहिए।

कुछ ग़लत हुआ। किसी ने आधार लिया और उस पर युद्धक्षेत्र बनाया। किसी ने छँटाई को पवित्र किया।

उस चीज़ का एक नाम है। यह एक सहारा है। और इसने दो हज़ार वर्षों तक दो चीज़ें धारण की हैं।

छत — नैतिक ढाँचा, समुदाय, अपनापन, साझा संसार की सांत्वना। और धार — रेखा के बाहर पड़ने वालों के विरुद्ध अनुमत हिंसा।

जो अनुसरण करता है वह दर्शन नहीं है। अंकगणित है। संख्याएँ अकादमिक स्रोतों से हैं।

भाग II

सहारा

धर्म की कीमत — संरचनात्मक, ऐतिहासिक और शरीर में।

अध्याय 5

वास्तुकला

एक नैतिक प्रणाली कर्ताओं — लोगों — के व्यवहार को साझा संसार में बाँधती है।

बिना समझौतों के कि कौन क्या करता है, कब और किस कीमत पर, साझा स्थान बिगड़ते हैं। सहयोग को नियमों की आवश्यकता है।

प्रश्न यह नहीं कि नियम आवश्यक हैं या नहीं। प्रश्न यह है कि नियम कहाँ से आते हैं।

केवल दो संभव उत्तर हैं। बस दो। इसलिए नहीं कि अन्य उत्तर वरीयता से बाहर किए गए, बल्कि इसलिए कि प्रश्न स्वयं संभव उत्तरों को दो तक सीमित करता है।

नियम या तो अपरिवर्तनीय वास्तविकता की संरचना से निकलते हैं — जो मापनीय, परीक्षणीय, खंडनीय रूप से सत्य है — या कहीं और से आते हैं।

एक दावा किया गया अधिकार। एक घोषित स्रोत। एक ग्रंथ, एक परंपरा, एक रहस्योद्घाटन।

कोई भी प्रणाली जिसका अधिकार व्याख्या पर निर्भर है, दूसरी श्रेणी में आती है, चाहे व्याख्या कितनी भी परिष्कृत हो।

वास्तुकला A अधिकार-आधारित नैतिकता है।

बंधन वास्तविकता से बाहर के एक अधिकार से आता है।

ईश्वर घोषित करता है। पैग़म्बर लिखता है। ग्रंथ संरक्षित करता है। संस्था व्याख्या करती है।

वास्तुकला B मूल-सिद्धांत नैतिकता है।

बंधन स्वयं वास्तविकता की अपरिवर्तनीय संरचना से आता है। नियम थोपे नहीं जाते। पढ़े जाते हैं।

प्रकाश की गति आदेशित नहीं है। अंतिम नैतिकता आदेशित नहीं है।

दोनों उन्हीं स्वयंसिद्धों के परिणाम हैं जो उसी वास्तविकता पर काम करते हैं।

यह द्विभाजन कोई दावा नहीं है। यह उस प्रश्न से व्युत्पन्न है कि अधिकार कहाँ से आता है।

उत्तर पूर्ण है: या तो उस संरचना से जो बदल नहीं सकती, या किसी और चीज़ से।

वास्तुकला A अस्थिर है।

संयोग से नहीं — इसलिए नहीं कि बुरे लोग इसका उपयोग करते हैं, विशिष्ट धर्मों में खामियाँ हैं।

अस्थिरता स्वयं वास्तुकला का परिणाम है।

हवा के समान आवृत्ति पर कंपन करने वाला पुल स्वयं को तोड़ देगा — इस्पात कितना भी मज़बूत हो। इस्पात दोषी नहीं। अनुनाद दोषी है।

अस्थिरता पाँच चरणों में प्रकट होती है।

हर चरण पिछले से निकलता है।

साथ मिलकर वे एक ज़बरदस्ती श्रृंखला बनाते हैं।

सिवाय इसके कि यह श्रृंखला पतन को मजबूर करती है।

चरण 1: घोषणा

एक अधिकार घोषित किया जाता है। ईश्वर ने बोला। पैग़म्बर ने ग्रहण किया। ग्रंथ प्रकट हुआ।

घटना ऐतिहासिक, एकल और अपुनरावर्ती है।

इसे दोहराया नहीं जा सकता। सत्यापित नहीं किया जा सकता। खंडित नहीं किया जा सकता।

इस पर केवल विश्वास किया जा सकता है।

यह पहला संरचनात्मक दोष है: एक नैतिक आधार जिसका परीक्षण नहीं किया जा सकता वह नैतिक आधार है जिसे ठीक नहीं किया जा सकता।

चरण 2: लिप्यंतरण

अधिकार का उत्पाद दर्ज किया जाता है। पट्टियाँ। पांडुलिपियाँ। पुस्तकें।

रिकॉर्डिंग मानव हाथों से होती है — हर कोई शोर डालता है। बेईमानी नहीं। शोर।

जो बचता है वह एक मानवीय उत्पाद है — मानवीय भाषा में लिखा, मानवीय संदर्भ से आकार लिया, मानवीय सीमाएँ उठाता — जो दैवीय मूल का दावा करता है।

चरण 3: व्याख्या

लिप्यंतरण को व्याख्या की आवश्यकता है क्योंकि भाषा अस्पष्ट है और कोई दो स्थितियाँ समान नहीं हैं।

ग्रंथ कहता है "हत्या मत करो।"

एक हज़ार वर्ष की टीका पूछती है: किसकी? कब? युद्ध में शत्रुओं की? विधर्मियों की?

ग्रंथ उत्तर नहीं देता क्योंकि ग्रंथ सीमित है और स्थितियाँ असीमित।

व्याख्या अंतर को भरती है। व्याख्याएँ विभाजित होती हैं। उन्हें विभाजित होना चाहिए।

एक सीमित ग्रंथ अनंत स्थितियों पर विभिन्न मनों द्वारा विभिन्न शताब्दियों में लागू किया गया हमेशा परस्पर विरोधी पाठ उत्पन्न करेगा।

टकराव व्याख्याकारों की विफलता नहीं है। यह वास्तुकला द्वारा उत्पन्न गणितीय निश्चितता है।

चरण 4: विभाजन

परस्पर विरोधी व्याख्याएँ परम सत्य के प्रतिस्पर्धी दावे उत्पन्न करती हैं। सुन्नी और शिया। कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट।

प्रत्येक मूल घोषणा के प्रति निष्ठा का दावा करता है। प्रत्येक दूसरे पर विकृति का आरोप लगाता है।

दावों का समाधान नहीं हो सकता क्योंकि प्रत्येक एक निरपेक्ष से व्युत्पन्न है।

समझौता विश्वासघात है। रियायत ईश्वर के साथ विश्वासघात।

वास्तुकला ने दो समूह उत्पन्न किए, प्रत्येक को विश्वास है कि वह सही है, और उन्हें एक ऐसा शस्त्र दिया जो नीचे नहीं रखा जा सकता।

चरण 5: पतन

सीमित संसाधनों वाले साझा संसार में प्रतिस्पर्धी निरपेक्ष हिंसा उत्पन्न करते हैं। दोष के रूप में नहीं। परिणाम के रूप में।

जिस प्रकार पहाड़ी पर गेंद को लुढ़कना चाहिए, प्रतिस्पर्धी निरपेक्ष समस्या के आकार द्वारा हिंसा की ओर धकेले जाते हैं।

समय-रेखा भिन्न होती है — शताब्दियाँ, दशक, कभी-कभी वर्ष। परिणाम भिन्न नहीं होता। सहारा गिरता है।

———

वास्तुकला B यह श्रृंखला उत्पन्न नहीं कर सकती क्योंकि इसकी नींव अलग-अलग कर्ताओं द्वारा अलग-अलग ढंग से व्याख्या नहीं की जा सकती। स्वयंसिद्धों में व्याख्या की गुंजाइश नहीं। परीक्षण शर्तें हैं।

स्वयंसिद्ध परीक्षित होते हैं, विश्वासित नहीं। 258 किल स्विच रखते हैं — प्रत्येक एक स्पष्ट, घोषित, खंडनीय शर्त जिसके तहत दावा आत्म-विनाश करता है।

किल स्विच कैसा दिखता है? यह एक है।

औपचारिक कार्य तनाव क्षेत्र के लिए एक विशिष्ट समीकरण व्युत्पन्न करता है। किल स्विच कहता है: यदि यह समीकरण मापी गई प्रबल नाभिकीय बल से मेल नहीं खाता, तो व्युत्पत्ति गिरती है।

समीकरण का परीक्षण किया गया। मेल खाया। किल स्विच बंद हुआ।

यह एक और है।

औपचारिक कार्य ब्रह्मांड के सबसे पुराने प्रकाश — ब्रह्मांडीय सूक्ष्मतरंग पृष्ठभूमि — में एक विशिष्ट पैटर्न की भविष्यवाणी करता है।

किल स्विच कोई अस्वीकरण नहीं है। यह एक विशिष्ट, घोषित, मापनीय शर्त है जिसके तहत दावा स्वयं-विनष्ट होता है।

आपत्ति आएगी: लेकिन किसी को तो व्याख्या करनी होगी कि स्वयंसिद्ध का क्या अर्थ है। यह व्याख्या है। आप वास्तुकला A हो।

उत्तर है: स्वयंसिद्ध गणितीय आउटपुट उत्पन्न करते हैं जिनकी तुलना मापों से की जाती है। प्रकाश की गति की व्याख्या नहीं की जाती।

जब नैतिकता उसी औपचारिक संरचना से व्युत्पन्न होती है जो मापनीय भौतिकी व्युत्पन्न करती है, नैतिकता वही प्रतिरक्षा विरासत में पाती है।

जो प्रणाली त्रुटि स्वीकार कर सकती है वह त्रुटि सुधार सकती है। जो प्रणाली त्रुटि स्वीकार नहीं कर सकती वह केवल बढ़ा सकती है।

यही संरचनात्मक अंतर है। यही एकमात्र संरचनात्मक अंतर है जो मायने रखता है।

———

इस बिंदु पर एक प्रश्न उठेगा: गैर-धार्मिक नैतिक परंपराओं का क्या?

गुण-नैतिकता, सामाजिक अनुबंध सिद्धांत, देखभाल नैतिकता — इनमें वास्तविक अंतर्दृष्टि है।

लेकिन कोई भी अपना अधिकार एक अपरिवर्तनीय, मापनीय, खंडनीय संरचना से व्युत्पन्न नहीं करता।

प्रत्येक अंततः एक ऐसे दावे पर टिका है जिसकी विभिन्न कर्ताओं द्वारा विभिन्न व्याख्या की जा सकती है।

पर्याप्त दबाव में, वही ज़बरदस्ती श्रृंखला सक्रिय होती है।

वे कम दबाव पर काम करने वाली वास्तुकला A की विविधताएँ हैं।

जैकोबिनों ने सामाजिक अनुबंध सिद्धांत का उपयोग किया। सोवियतों ने इतिहास का दावा किया विज्ञान उपयोग किया। तंत्र वही था।

यह द्विभाजन के विरुद्ध सबसे मज़बूत आपत्ति है — और उत्तर यह नहीं कि धर्मनिरपेक्ष नैतिकता बुरी है, बल्कि यह कि उसने अभी तक संरचनात्मक समस्या से छुटकारा नहीं पाया है।

अध्याय 6

पाठ में छुपी धार

संरचनात्मक दावा कुछ विशिष्ट की भविष्यवाणी करता है। यह भविष्यवाणी करता है कि वास्तुकला A द्वारा उत्पन्न किसी भी ग्रंथ में प्रेम और हिंसा दोनों एक ही पृष्ठ पर होंगे।

जो अनुसरण करता है वह प्रमाण है।

यदि यह दावा संरचनात्मक है, तो इसे सभी परंपराओं में टिकना चाहिए।

तोरा

"अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो।" लैव्यव्यवस्था 19:18।

वही पुस्तक। वही दावा किया गया लेखक। वही ईश्वर:

"यदि कोई पुरुष किसी पुरुष के साथ स्त्री की भाँति शयन करे, तो दोनों ने घृणित कर्म किया; उन्हें निश्चय मार डाला जाए।" लैव्यव्यवस्था 20:13।

"जब तेरा परमेश्वर यहोवा तुझे उस देश में पहुँचाए और तेरे सामने से बहुत सी जातियों को निकाल दे — तू उन्हें पूरी तरह नष्ट करना। उनसे वाचा मत बाँधना और उन पर दया मत करना।" व्यवस्थाविवरण 7:1–2।

"अब जा, अमालेकियों पर आक्रमण कर और जो कुछ उनका है उसे पूरी तरह नष्ट कर। उन्हें न बख्शना; पुरुष और स्त्री, बच्चे और दूधपीते, बैल और भेड़, ऊँट और गधे सबको मार डाल।" 1 शमूएल 15:3।

ईश्वर — दावा किया गया अधिकार, नैतिकता का स्रोत, सहारे का आधार — पूर्ण विनाश का आदेश देता है।

नया नियम

"अपने शत्रुओं से प्रेम करो और अपने सताने वालों के लिए प्रार्थना करो।" मत्ती 5:44।

वही नियम। वही परंपरा:

"यह मत समझो कि मैं पृथ्वी पर शांति लाने आया हूँ। मैं शांति नहीं बल्कि तलवार लाने आया हूँ।" मत्ती 10:34।

और वह पद जिसने उन्नीस शताब्दियों की यहूदी-विरोधी बोई: "तुम अपने पिता शैतान से हो।" यूहन्ना 8:44।

यह पद मध्यकालीन रक्त-आरोपों में, लूथर की आराधनालय जलाने की पुकार में, नाज़ी प्रचार में उद्धृत किया गया।

पूर्ण अभिलेख अध्याय 8 में है।

———

क़ुरान

"धर्म में कोई ज़बरदस्ती नहीं।" बक़रा 2:256।

वही पुस्तक। वही दावा किया गया रहस्योद्घाटन। वही ईश्वर:

"और उन्हें जहाँ पाओ क़त्ल करो।" बक़रा 2:191।

"उन लोगों से लड़ो जो अल्लाह पर ईमान नहीं लाते, यहाँ तक कि वे अपने हाथ से जिज़्या दें और वे अधीन हों।" तौबा 9:29।

"जब हराम के महीने बीत जाएँ तो मुशरिकों को जहाँ पाओ क़त्ल करो और उन्हें पकड़ो और उन्हें घेरो।" तौबा 9:5।

कोई ज़बरदस्ती नहीं — और जहाँ पाओ क़त्ल करो। वही पुस्तक। वही ईश्वर। व्याख्याकार चुनता है।

यही दोष है।

व्याख्याकार नहीं।

वास्तुकला।

———

हिंदू धर्मग्रंथ

भगवद्गीता, अध्याय 2, श्लोक 19: "न तो जो मारता है वह मारता है और न जो मारा जाता है वह मारा जाता है।"

वही परंपरा। वही शास्त्रीय अधिकार:

मनुस्मृति — मनु के नियम — हिंदू इतिहास के सबसे प्रभावशाली विधिक ग्रंथों में से एक, जाति व्यवस्था स्थापित करता है।

शूद्र ब्रह्मा के पैरों से उत्पन्न हुआ। शूद्र सेवा के लिए है।

दलित — "अछूत" — इस व्यवस्था से भी नीचे रखे गए। जन्म से अशुद्ध।

करोड़ों मनुष्य, हज़ारों वर्षों तक, दैवीय अधिकार का दावा करने वाले ग्रंथ द्वारा स्थायी अधीनता में फ़रज़ किए गए।

ग्रंथ में गीता की अलौकिकता भी है और मनुस्मृति का पदानुक्रम भी। सुधारक एक पढ़ता है। अत्याचारी दूसरा। दोनों ग्रंथ के प्रति निष्ठावान हैं।

वास्तुकला छानती नहीं। वह दोनों को — अलौकिकता और पदानुक्रम, मुक्ति और पिंजरा — एक ही अधिकार के तहत रखती है।

यही दोष है।

———

बौद्ध धर्मग्रंथ

धम्मपद, श्लोक 5: "इस संसार में घृणा कभी घृणा से शांत नहीं होती। अघृणा से ही घृणा शांत होती है।"

वही परंपरा। वही शास्त्रीय अधिकार:

महावंश — राजा दुट्ठगामणी ने हज़ारों ग़ैर-बौद्ध तमिलों को मारा।

वे पशुओं जैसे थे। हत्या पाप नहीं था।

वही संरचनात्मक गतिविधि जो हर परंपरा करती है: अंतर-समूह का पवित्रीकरण, बाहरी-समूह का अमानवीकरण।

सामग्री बदलती है। तंत्र नहीं बदलता।

म्यांमार में, 2017 में, बौद्ध भिक्षु आशिन विराथू ने रोहिंग्या के विरुद्ध हिंसा को उचित ठहराने के लिए शास्त्रीय भाषण का उपयोग किया।

वह धर्म जिसे पश्चिमी दुनिया ध्यान और शांति से जोड़ती है, उसने 700,000 लोगों के विस्थापन का नैतिक ढाँचा प्रदान किया।

कोई धर्म छूट में नहीं है। वास्तुकला उन सभी में काम करती है।

———

प्रेम के पद सत्य हैं। करुणा सत्य है। हर परंपरा में लाखों धार्मिक लोग प्रेम के पदों के अनुसार जीते हैं और कभी रत्ती भर हानि नहीं पहुँचाते। यह प्रश्न में नहीं है।

यह अध्याय कहता है: वास्तुकला ने प्रेम और हिंसा को एक ही पृष्ठ पर, एक ही अधिकार के तहत, चुनौती से समान प्रतिरक्षा के साथ रखा।

एक संरचनात्मक इंजीनियर जो एक ही दीवार में भार-वाहक बीम और विस्फोटक दोनों पाता है, नहीं कहता "इमारत ज़्यादातर अच्छी है।"

विस्फोटक ग्रंथ में हैं। हमेशा ग्रंथ में रहे हैं।

वे वास्तुकला द्वारा वहाँ रखे गए — मानवीय शताब्दियों में मानवीय सीमाओं के साथ मानवीय कर्ताओं द्वारा किए गए दावा किए गए दैवीय संकेत के मानवीय लिप्यंतरण की प्रक्रिया द्वारा।

क्योंकि उन्हें हटाने के लिए यह स्वीकार करना होगा कि ग्रंथ एक मानवीय उत्पाद है। और वह सहारे को मार देगा।

सहारा धार को हटा नहीं सकता क्योंकि धार हटाना सहारे को मार देगा।

———

हर धर्म में हर सुधार आंदोलन ने प्रेम के पद पढ़ने और हिंसा के पद अनदेखा करने का प्रयास किया। हर कट्टरपंथी आंदोलन ने हिंसा के पद पढ़ने और प्रेम के पद अनदेखा करने का प्रयास किया।

दोनों आंदोलन ग्रंथ के प्रति निष्ठावान हैं, क्योंकि ग्रंथ में दोनों हैं।

उदारवादियों और कट्टरपंथियों के बीच बहस इस बारे में नहीं है कि कौन सही पढ़ रहा है। दोनों सही पढ़ रहे हैं।

ग्रंथ दोनों बातें कहता है। यही संरचनात्मक समस्या है।

ग्रंथ में धार है। लेकिन दराज़ में धार निष्क्रिय है। किसी को उसे उठाना होगा।

अगला अध्याय उस हाथ का वर्णन करता है।

अध्याय 7

तंत्र

पाँच चरण वास्तुकला की अस्थिरता का वर्णन करते हैं।

यह अध्याय तंत्र का वर्णन करता है — वह प्रचालन प्रक्रिया जिसके द्वारा मचान शरीर

छँटाई जैविक है। हर मानव शरीर एक रेखा खींचता है: अंदर, बाहर। स्व, अन्य। आदत

मचान जो करता है वह आदत को पवित्र बनाता है। वह जैविक छँटाई तंत्र को लेता है और

अन्य मात्र भिन्न नहीं बल्कि ब्रह्मांडीय रूप से भिन्न हो जाता है — ईश्वर की नज़र में भिन्न,

आगे सात प्रक्रियाएँ हैं। प्रत्येक अवलोकनीय। प्रत्येक प्रलेखित। प्रत्येक हर प्रमुख धर्म में उपस्थित

सिद्धांत नहीं। इतिहास।

———

प्रक्रिया 1: पहचान का विलय

मचान धार्मिक पहचान को व्यक्तिगत पहचान से मिला देता है।

तुम इस्लाम का अभ्यास करने वाले व्यक्ति नहीं हो। तुम मुसलमान हो।

तुम चर्च जाने वाले व्यक्ति नहीं हो। तुम ईसाई हो।

पहचान सर्वग्राही है। हर अन्य पहचान को अधीन करती है — राष्ट्रीयता, पेशा, परिवार

प्रदर्शन: सलमान रुश्दी ने प्रकाशित किया *शैतानी आयतें* 1988 में। आयतुल्लाह खुमैनी ने उनकी मृत्यु का फ़तवा जारी किया।

उपन्यास को एक साहित्यिक कृति के रूप में नहीं माना गया जिस पर बहस, समीक्षा या उपेक्षा की जा सकती थी, बल्कि

किताबों की दुकानों पर बम फेंके गए। अनुवादकों को छुरा मारा गया। हितोशी इगाराशी, जापानी अनुवादक, की हत्या

एक उपन्यास। एक काल्पनिक कृति। अस्तित्वगत खतरे के रूप में माना गया, क्योंकि मचान ने आस्था

जब पहचान विलीन हो जाती है, आलोचना आक्रमण बन जाती है। प्रश्न करना ईशनिंदा बन जाता है।

मचान स्वयं को अप्रश्नेय बनाता है, स्वयं को उस चीज़ से मिलाकर जिसे व्यक्ति छोड़ नहीं सकता — अपनी पहचान की भावना।

———

प्रक्रिया 2: अंतर्समूह का पवित्रीकरण

मचान अंतर्समूह को पवित्र घोषित करता है।

चुना हुआ लोग। उम्मा — वैश्विक मुस्लिम परिवार। मसीह का शरीर। सदस्यता

अंतर्समूह का सदस्य केवल संबंधित नहीं होता। उस पर दावा किया जाता है — ईश्वर द्वारा,

प्रदर्शन: मैनिफ़ेस्ट डेस्टिनी का सिद्धांत। संयुक्त राज्य एक ईसाई राष्ट्र के रूप में जिसे ईश्वर ने

यह वाक्यांश 1845 में पत्रकार जॉन ओ'सुलिवान के माध्यम से सार्वजनिक विमर्श में आया, लेकिन धर्मशास्त्र

मैसाचुसेट्स पहुँचने वाले प्यूरिटन बसावटकर्ता मानते थे कि वे एक नया जेरूसलम बना रहे हैं — एक पहाड़ी पर शहर, ईश्वर द्वारा चुना गया, दैवीयकृपा से धन्य। वह विश्वास कभी नहीं गया। वह राष्ट्र की स्थापना पौराणिक कथा बन गया: अमेरिका ईश्वर का नया

उत्तरी अमेरिका के मूल निवासी केवल रास्ते में नहीं थे। वे वाचा से बाहर थे।

धर्मशास्त्र ने लूट को चोरी जैसा नहीं बल्कि आज्ञाकारिता जैसा महसूस कराया।

अंतर्समूह पवित्रीकरण ने क्षेत्रीय विस्तार को दैवीय मिशन में बदल दिया।

जो नरसंहार हुआ वह धर्मशास्त्र का विश्वासघात नहीं था।

वह उसका परिणाम था।

———

प्रक्रिया 3: बहिर्समूह का चिह्नांकन

मचान बहिर्समूह को संरचनात्मक रूप से हीन चिह्नित करता है।

काफ़िर। मुशरिक। पगान। अन्यजाति। विधर्मी। धर्मत्यागी। अछूत। ये शब्द भिन्नता नहीं बल्कि

बहिर्समूह मात्र ग़लत नहीं है। वह इस तरह ग़लत है जैसा स्वयं ईश्वर ने घोषित किया।

प्रदर्शन: जाति व्यवस्था और दलित।

सैकड़ों करोड़ मनुष्य, हज़ारों वर्षों तक, जन्म से ही स्थायी रूप से प्रदूषित चिह्नित

2013 में, भारत के तमिलनाडु राज्य में, इलावरासन नामक एक युवा दलित बाईस वर्ष की आयु में मृत पाया गया

क़ानून बदला। चिह्नांकन नहीं बदला। क्योंकि चिह्नांकन कानूनी नहीं था। ब्रह्मांडीय था।

यह ग्रंथ में था।

यह वास्तुकला द्वारा पवित्र किया गया था।

प्रक्रिया 4: नैतिक अनुज्ञा

मचान बहिर्समूह के विरुद्ध उन कार्यों के लिए नैतिक अनुमति देता है जो अंतर्समूह के भीतर

बहिर्समूह के विरुद्ध हिंसा नैतिक व्यवस्था का उल्लंघन नहीं है। यह उसका अनुप्रयोग है।

मचान को व्यक्ति की नैतिक भावना पर विजय पाने की आवश्यकता नहीं। मचान उसे पुनर्निर्देशित करता है।

जो व्यक्ति ईश्वर के लिए मारता है वह विश्वास करता है कि वह अच्छा कर रहा है। यही तंत्र की शक्ति है। इसे

प्रदर्शन: बरुख गोल्डस्टीन, एक अमेरिकी-इज़रायली चिकित्सक, ने पैट्रिआर्क्स की गुफ़ा में प्रवेश किया

गोल्डस्टीन एक डॉक्टर था। उसने हिप्पोक्रेटिक शपथ ली थी। उसने अपना पेशेवर जीवन चिकित्सा को

उसकी कब्र तीर्थस्थल बन गई। शिलालेख पर लिखा था: "स्वच्छ हाथ और शुद्ध हृदय।"

मचान नैतिकता को दबाता नहीं।

मचान उसे अपहृत करता है।

प्रक्रिया 5: परलोक का उत्तोलक

मचान अनुपालन के लिए पुरस्कार और विद्रोह के लिए दंड का वादा करता है — इस जीवन में नहीं जहाँ

उत्तोलक अनंत और परीक्षण-अयोग्य है। एक अनंत प्रोत्साहन जिसे कभी जाँचा नहीं जा सकता

प्रदर्शन: ईरान-इराक़ युद्ध, 1980–1988।

ईरानी शासन ने बच्चों को प्लास्टिक की चाबियाँ बाँटीं — भौतिक, मूर्त, प्लास्टिक की चाबियाँ — और बताया

बच्चों को पट्टियाँ दी गईं। पट्टियों पर लिखा था 'ईश्वर का योद्धा।' कुछ बारह वर्ष की आयु

वे बारूदी सुरंगों में चले क्योंकि जिन भी वयस्कों पर वे भरोसा करते थे — उनकी माँएँ, उनके शिक्षक, उनके इमाम

यह संबंधित लोगों की विफलता नहीं है। माँएँ राक्षस नहीं थीं। बच्चे

अनंत पुरस्कार — शाश्वत स्वर्ग — एक सीमित कार्य के लिए — आगे चलना। गणित भारी है

वह वास्तुकला पूर्ण क्षमता पर काम कर रही है।

प्रक्रिया 6: सीलबंद लूप — व्यवस्था सुधार के विरुद्ध स्वयं को बंद कर लेती है

मचान लूप बंद कर देता है। संदेह पाप है। प्रश्न करना आस्था की कमी है। मचान के विरुद्ध प्रमाण

वास्तुकला सुधार को अतिक्रमण परिभाषित करके स्वयं को सुधार से बचाती है।

जो व्यवस्था संदेह को पाप मानती है वह अपनी ग़लती के प्रमाण संसाधित नहीं कर सकती।

जो व्यवस्था अपनी ग़लती के प्रमाण संसाधित नहीं कर सकती वह अद्यतन नहीं हो सकती।

जो व्यवस्था अद्यतन नहीं हो सकती वह केवल कठोर हो सकती है।

प्रदर्शन: जोर्डानो ब्रूनो, डॉमिनिकन भिक्षु, दार्शनिक, गणितज्ञ।

उसने प्रस्तावित किया कि तारे दूरस्थ सूर्य हैं जिनके अपने ग्रह हैं। उसने अनंत ब्रह्मांड प्रस्तावित किया

17 फ़रवरी 1600 को, उसे रोम के कैम्पो दे' फ़ियोरी ले जाया गया, नग्न किया गया, लोहे की मुँहबंदी से

मुँहबंदी वह विवरण है। मचान ने उसे केवल मारा नहीं। मचान ने पहले उसे चुप कराया। नहीं कर सकी

मुँहबंदी प्रक्रिया 6 का भौतिक रूप है: वास्तुकला ईमानदार जिज्ञासा को नष्ट करके स्वयं को सील कर रही है

प्रक्रिया 7: पितृसत्तात्मक वास्तुकला

ग्रंथ पुरुषों ने लिखे, पुरुषों ने प्रतिलिपि बनाई, पुरुषों ने व्याख्या की, उन समाजों में जहाँ पुरुषों के पास

परिणामी नैतिक व्यवस्थाएँ पुरुष सत्ता को दैवीय रूप से स्वीकृत कोडित करती हैं: स्त्री संपत्ति के रूप में इस्लामी न्यायशास्त्र में तर्कशक्ति में, हिंदू धर्म में मासिक धर्म के दौरान स्त्री प्रदूषित।

प्रदर्शन: सती।

हिंदू परंपरा में, सती एक विधवा का अपने पति की चिता पर स्वयं को जीवित जलाने की प्रथा थी

स्त्री को विवाह के वस्त्र पहनाए जाते थे। उसे चिता पर पति के शव के बगल में रखा जाता था।

कई प्रलेखित मामलों में, स्त्री को पहले अफ़ीम से नशा किया जाता था। कई अन्य में नहीं।

जो स्त्री जली उसे देवी के रूप में पूजा गया। मंदिर बनाए गए। जलना

यही इसे प्रक्रिया 7 बनाता है: मचान ने मात्र स्त्री के विनाश की अनुमति नहीं दी।

प्रथा सदियों तक जारी रही।

ब्रिटिश औपनिवेशिक प्रशासन ने इसे 1829 में प्रतिबंधित किया। हिंदू सुधारक इसके विरुद्ध

मैग्डलीन लॉन्ड्रीज़, अध्याय 8 में वर्णित, एक भिन्न परंपरा में वही प्रक्रिया हैं।

प्रक्रिया 7 मात्र स्त्रियों को अधीन नहीं करती। उनके बच्चों को अधीन करती है। शरीरों को

सात प्रक्रियाएँ। अपवाद नहीं। दुरुपयोग नहीं। विशेषताएँ।

ईसाई धर्म, इस्लाम, यहूदी धर्म, हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म में उपस्थित — भिन्न रूपों में, भिन्न तीव्रता में

सिद्धांत नहीं। अमूर्तता नहीं।

इतिहास। शरीर।

सात प्रक्रियाएँ। पहचान का विलय — मचान स्व से विलीन। अंतर्समूह का पवित्रीकरण — चुने हुए, उम्मा, मसीह का शरीर। बहिर्समूह का चिह्नांकन — काफ़िर, मुशरिक, विधर्मी, पाखंडी। नैतिक अनुज्ञा — हिंसा को आज्ञाकारिता के रूप में पुनर्परिभाषित। परलोक का उत्तोलक — अनंत पुरस्कार, अनंत दंड, सत्यापन-अयोग्य। सीलबंद लूप — संदेह पाप है। पितृसत्तात्मक वास्तुकला — पुरुष सत्ता दैवीय रूप से स्वीकृत।

सात दंतचक्र। सभी जुड़े हुए। सभी घूमते हुए।

और सभी एक ही परिणाम उत्पन्न करते हुए: ज़मीन पर शरीर।

अध्याय 8

दस्तावेज़

आगे वास्तुकला अ के हिंसा में पतन का ऐतिहासिक दस्तावेज़ है।

अनुमान शैक्षिक स्रोतों से लिए गए हैं। जहाँ अनुमान भिन्न हैं, सीमाएँ दी गई हैं। जहाँ

यह अध्याय दावा नहीं करता कि धर्म सूचीबद्ध हर संघर्ष का एकमात्र कारण है।

यह दावा करता है कि धर्म ने वह रेखा प्रदान की जिसके साथ हिंसा संगठित हुई — छँटाई तंत्र

मचान ने ब्लेड पकड़ा। मचान ने उसे चलाया भी, या मात्र पकड़ा जबकि अन्य हाथों ने

इस अध्याय की आवाज़ तर्क नहीं है। अंकगणित है। संख्याएँ बोलती हैं।

———

प्राचीनता

तीन शताब्दियों तक, रोमन साम्राज्य ने ईसाइयों को सताया। संख्याएँ विवादित हैं। अनुमान

ईसाइयों को अखाड़े में शेरों के सामने फेंका गया। उन्हें नीरो के बगीचों में मानव मशालों के रूप में जीवित जलाया गया — उनके शरीरों को तारकोल में भिगोकर शाही भोजों को रोशन करने के लिए आग लगाई गई।

तंत्र सरल था: बहिर्समूह का चिह्नांकन। नैतिक अनुज्ञा। ईसाई भिन्न थे। अतः ईसाई व्यय-योग्य थे।

फिर मचान ने हाथ बदले।

312 ई. में, सम्राट कॉन्स्टैंटाइन ने ईसाई धर्म अपनाया। एक पीढ़ी के भीतर — एक जीवनकाल

380–392 ई. के थियोडोसियन आदेशों ने पगान पूजा को प्रतिबंधित किया, मंदिर बंद किए, बलिदान को अपराध

415 ई. में, मिस्र के अलेक्जेंड्रिया में, एक ईसाई भीड़ ने दार्शनिक हाइपेशिया को उसके रथ से खींच लिया।

हाइपेशिया एक गणितज्ञ थीं। खगोलविद। शिक्षिका। वे प्राचीन पुस्तकालय के अंतिम महान मस्तिष्क थीं

भीड़ ने उन्हें नग्न किया। छत की टाइलों और सीपों से जीवित चमड़ा उतारा। उनके

उन्हें इसलिए नहीं मारा गया कि वे क्या मानती थीं। उन्हें इसलिए मारा गया कि वे क्या प्रतिनिधित्व करती थीं: एक मस्तिष्क जो

तंत्र समान था। पहचान विलय। अंतर्समूह पवित्रीकरण। बहिर्समूह चिह्नांकन। नैतिक अनुज्ञा

वास्तुकला ने हाथ बदले।

वास्तुकला नहीं बदली।

इस्लामी विजय

मुहम्मद की मृत्यु के एक शताब्दी के भीतर, इस्लामी साम्राज्य अरब प्रायद्वीप से

विस्तार पूर्णतः धार्मिक नहीं था। राजनीतिक, आर्थिक, सैन्य भी था। साम्राज्य कारणों से विस्तार करते हैं

ज़िम्मी प्रणाली उस रेखा की प्रशासनिक अभिव्यक्ति थी। ग़ैर-मुस्लिमों को रहने की अनुमति

उनसे जज़िया — केवल ग़ैर-मुस्लिमों पर लगाया जाने वाला विशेष कर — वसूला जाता था। उन्हें

ज़िम्मी प्रणाली नरसंहार नहीं थी। वास्तुकला थी।

इसने धार्मिक श्रेणीक्रम को राज्य की प्रशासनिक संरचना में कोडित किया और बनाए रखा

ज़िम्मी परिवार में जन्मा बच्चा अधीन जन्मा था। किसी चीज़ के कारण नहीं जो बच्चे ने

120 वर्षों के निरंतर विस्तार में अनुमानित मृत्यु: सैकड़ों हज़ार से कई लाख

मचान ने नक्शा प्रदान किया।

तलवार ने नक्शे का अनुसरण किया।

धर्मयुद्ध

पहला धर्मयुद्ध 7 जून 1099 को जेरूसलम पहुँचा, तीन वर्ष की यात्रा और हज़ारों किलोमीटर के बाद। धर्मयोद्धाओं ने अपने कपड़ों पर क्रूस सिल लिया था। उन्होंने मसीह के लिए पवित्र नगर को पुनः जीतने की शपथ ली थी।

जो हुआ वह मध्यकालीन इतिहास के सबसे भीषण नरसंहारों में से एक था।

धर्मयोद्धाओं ने नगर के लगभग हर मुस्लिम और यहूदी निवासी को मार डाला। पुरुष, स्त्रियाँ, बच्चे

केवल जेरूसलम में अनुमानित मृत: एक दिन में 10,000–70,000।

मारे गए इसलिए नहीं कि उन्होंने क्या किया था बल्कि इसलिए कि वे किस इमारत में प्रार्थना करते थे।

पवित्र भूमि की ओर जाते हुए, धर्मयोद्धाओं ने 1096 के राइनलैंड नरसंहार किए: व्यवस्थित

यहूदियों को विकल्प दिया गया: ईसाई धर्म अपनाओ या मरो। जिन्होंने मृत्यु चुनी — जिन्होंने

इतिवृत्त व्यक्तिगत परिवारों का दस्तावेज़ करते हैं। वोर्म्स के रब्बी मेशुल्लम बेन इसहाक ने अपने पुत्र को मारा

सैनिकों ने अपनी तलवारें नहीं छिपाईं।

परिवारों ने अपने बच्चों को स्वयं मार डाला बजाय इसके कि उन्हें धर्मांतरित होने दिया जाए।

मचान ने हत्यारे और मारे गए दोनों उत्पन्न किए।

वास्तुकला भेद नहीं करती।

ऐल्बिजेंसियन धर्मयुद्ध, 1209–1229: मुस्लिमों के विरुद्ध नहीं। ईसाइयों के विरुद्ध।

दक्षिणी फ़्रांस के कैथर एक ही आस्था की भिन्न व्याख्या रखते थे। पोप ने घोषित किया अर्नॉद अमॉरी से पूछा गया कि शहर में कैथरों को विश्वासी कैथोलिकों से कैसे अलग करें।

उनका कथित उत्तर: "सबको मार डालो। ईश्वर अपनों को पहचान लेगा।"

पूरा शहर मारा गया। पुरुष, स्त्रियाँ, बच्चे, कैथोलिक और कैथर एक साथ।

बेज़ियर्स में अनुमानित मृत: एक दिन में 7,000–20,000। संपूर्ण ऐल्बिजेंसियन धर्मयुद्ध में

मचान अपने ही अनुयायियों के विरुद्ध तैनात हुआ जिन्होंने उसी ईश्वर को अलग ढंग से पढ़ा।

नौ प्रमुख धर्मयुद्ध। संयुक्त अनुमानित मृत्यु: 1–3 मिलियन।

———

इंक्विज़िशन और डायन-शिकार

स्पैनिश इंक्विज़िशन: 350 वर्षों में लगभग 3,000–5,000 मारे गए, अभिलेखीय अभिलेखों पर आधारित

ये संख्याएँ लोकप्रिय मिथक से कहीं कम हैं। यह अध्याय साक्ष्य-आधारित आँकड़े उपयोग करता है

तीन हज़ार लोग उसी ईश्वर की ग़लत व्याख्या में विश्वास करने के लिए जीवित जलाए गए।

तीन हज़ार मनुष्य — एक ही इमारत में खिड़कियाँ — जिन्हें खंभों से बाँधा गया,

तंत्र आधिकारिक और प्रक्रियात्मक था। अभियुक्त से पूछताछ की जाती। स्वीकारोक्ति निकाली जाती

दोषी को फाँसी के लिए धर्मनिरपेक्ष शाखा को सौंप दिया जाता, क्योंकि चर्च सीधे रक्त नहीं बहा सकता था। एक नौकरशाही चाल। वास्तुकला की अपनी नैतिक संहिता में एक प्रक्रियात्मक कमी।

वास्तुकला अपनी नैतिक संहिता में प्रक्रियात्मक कमियाँ खोज रही है। वास्तुकला ठीक वैसे ही काम कर रही है

यूरोपीय डायन-शिकार, 1450–1750: 40,000–60,000 मारे गए। बहुमत स्त्रियाँ।

जिस धर्मशास्त्रीय नवाचार ने यह संभव किया वह एक पुस्तक थी: मैलेउस मालेफ़िकारम —

एक पुस्तक — पुरुषों ने लिखी, संस्था ने स्वीकृत, यूरोप भर में वितरित — जिसने

1612 में, पेंडल, लैंकशायर में, एलिज़न डिवाइस नामक एक स्त्री — युवा, ग़रीब, आंशिक दृष्टिहीन —

दस लोगों को लैंकैस्टर कैसल में फाँसी दी गई। एलिज़न बीस वर्ष की थी। उसकी दादी, डेमडाइक

मचान को उनका डायन होना ज़रूरी नहीं था। मचान को उनका बाहर होना ज़रूरी था। बाहर होने के बाद

दसियों हज़ार स्त्रियाँ — चिकित्सक, दाइयाँ, बहिष्कृत, मानसिक रोगी, असुविधाजनक,

———

धर्मयुद्ध

जर्मन किसान युद्ध, 1524–1525: 100,000 मृत। किसान सामंती उत्पीड़न के विरुद्ध उठे लूथर के धर्मशास्त्र को शब्दशः लिया: यदि हर व्यक्ति ईश्वर के समक्ष समान है, तो दासत्व

मार्टिन लूथर — वह व्यक्ति जिसने पोप को चुनौती दी, जिसने चर्च के द्वार पर अपने शोधपत्र ठोके,

उसके पैम्फ़लेट "हत्यारे, चोर किसान गिरोहों के विरुद्ध" ने राजकुमारों को प्रेरित किया

सेंट बार्थोलोम्यू दिवस का नरसंहार, 24 अगस्त 1572: कैथोलिक बनाम ह्यूगनॉट।

पैरिस में, कैथोलिक भीड़ ने भोर में ह्यूगनॉट को मारना शुरू किया। हत्या बारह शहरों में फैल गई

पोप — ग्रेगरी XIII — ने रोम में ख़बर प्राप्त की। उसने ते देउम — ईश्वर को धन्यवाद का गीत — का आदेश

और एक स्मारक पदक ढलवाया। एक पदक। धातु का टुकड़ा, डिज़ाइन और ढाला गया, मनाने के लिए

एक पदक। एक नरसंहार की स्मृति में। अनुमानित मृत: 5,000–30,000।

तीस वर्षीय युद्ध, 1618–1648: प्रोटेस्टेंट बनाम कैथोलिक।

तीस वर्ष तक, सेनाएँ जर्मनी में आगे-पीछे चलीं। गाँव जलाए।

कुछ क्षेत्रों में, जीवितों ने मृतों को खाया। पूरे शहर अस्तित्व से मिट गए — एक

जर्मनी की जनसंख्या 30 प्रतिशत घट गई। कुछ क्षेत्रों ने दो-तिहाई निवासी खो दिए

संयुक्त यूरोपीय धर्मयुद्ध: 6–12 मिलियन मृत। उस युग में जब यूरोप की कुल जनसंख्या

कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट ने एक ही बाइबल पढ़ी।

एक ही मसीह की पूजा की।

एक ही पिता से प्रार्थना की।

और एक शताब्दी तक एक-दूसरे को मारते रहे क्योंकि वास्तुकला ने दो पाठ उत्पन्न किए, दोनों को निरपेक्ष घोषित किया

दस्तावेज़ जारी है। इसके साथ रहो।

औपनिवेशिक मचान

1452 में, पोप निकोलस पंचम ने एक औपचारिक आदेश जारी किया — उच्चतम सत्ता से सीधा आदेश

आदेश ने कोमल भाषा का उपयोग नहीं किया। इसने ईसाई राजाओं को "आक्रमण, कब्ज़ा

1493 में, कोलंबस के अमेरिका पहुँचने के बाद, पोप अलेक्ज़ेंडर षष्ठम ने एक दूसरा आदेश जारी किया जो एक नक्शे पर खींचा गया रोम के एक व्यक्ति द्वारा जिसने कभी वे भूमियाँ नहीं देखी थीं जो वह दे रहा था। पश्चिम में

उन भूमियों पर पहले से रहने वाले लोगों से परामर्श नहीं किया गया। उन पर विचार नहीं किया गया।

ये हाशिये के दस्तावेज़ नहीं थे। ये पापल आदेश थे — ईसाई जगत द्वारा प्रदान किए जा सकने वाले संस्थागत सत्ता का उच्चतम रूप।

विजय, दासता और सांस्कृतिक संहार के लिए मचान का स्पष्ट, लिखित, संस्थागत प्राधिकार।

जहाँ भी यूरोपीय शक्तियों ने विस्तार किया, पैटर्न एक ही था।

अमेरिका में, स्पैनिश मिशनरी एज़्टेक और इंका लोगों के बीच बाइबल लेकर आए,

लेकिन मिशनरियों के पीछे सैनिक आए। सैनिकों के पीछे गवर्नर आए। गवर्नरों के पीछे

अफ़्रीका में, पैटर्न दोहराया गया। ब्रिटिश मिशनरियों ने स्कूल और अस्पताल स्थापित किए

उनका इरादा अच्छा था। कई का सचमुच अच्छा इरादा था। लेकिन वे सांस्कृतिक ज़मीन साफ़ कर रहे थे

प्रशांत में, ऑस्ट्रेलिया में, न्यूज़ीलैंड में, ओशिनिया के द्वीपों में — वही क्रम।

वह क्रम संयोग नहीं था। मचान ने दरवाज़ा खोला। औपनिवेशिक शक्ति उसमें से चलकर गई

कनाडा के आवासीय विद्यालय 1880 के दशक से 1996 तक चले। 150,000 से अधिक मूल निवासी बच्चे

उन्हें अपनी भाषाएँ बोलने से मना किया गया। अपनी संस्कृतियाँ अभ्यास करने से मना किया गया। बाल काटे गए

जिन बच्चों ने मातृभाषा बोली उन्हें पीटा गया। जिन बच्चों ने अपने ढंग से प्रार्थना की उन्हें दंडित किया गया

स्पष्ट नीति सांस्कृतिक संहार थी। व्यवस्था के वास्तुकारों द्वारा प्रयुक्त वाक्यांश

लक्ष्य था एक लोगों की पहचान मिटाना और उसे मचान की पहचान से बदलना

अनुमानित मृत्यु: 4,000–6,000 पुष्ट, जाँच जारी।

बहुत से बच्चे बस ग़ायब हो गए। उनके परिवारों को बताया गया कि वे भाग गए। वे भागे नहीं थे

2021 में, भूमि-भेदक रडार ने पूर्व कैम्लूप्स इंडियन आवासीय विद्यालय में 215 अचिह्नित कब्रें उजागर कीं

फिर मैरीवल में 751। फिर क्रैनब्रुक में 182।

संख्याएँ बढ़ती रहीं। हर संख्या एक बच्चा था। हर बच्चे का एक नाम था जो उससे छीन लिया गया

बच्चे। अचिह्नित कब्रों में दफ़न, उन संस्थाओं के परिसर में जिन्होंने दावा किया कि वे बचा रही थीं

———

आयरलैंड की मैग्डलीन लॉन्ड्रीज़ 1765 से 1996 तक चलीं। अनुमानत: 30,000 स्त्रियाँ बंदी बनाई गईं

उनका अपराध: बिना पति के गर्भवती होना। या अनाथ होना। या ग़रीब होना। या माना जाना

उन्हें नए नाम दिए गए। उनकी पुरानी पहचान मिटा दी गई। उन्हें व्यावसायिक लॉन्ड्री में काम पर लगाया गया

लॉन्ड्रीज़ व्यावसायिक उद्यमों के रूप में चलती थीं। होटलों, अस्पतालों और सरकारों से ठेके स्वीकार करती थीं

जन्म के समय उनके बच्चे छीन लिए गए। नवजातों को माताओं से अलग कर कैथोलिक परिवारों में रखा गया

शारीरिक और भावनात्मक दुर्व्यवहार सामान्य बात थी। जो स्त्रियाँ प्रतिरोध करतीं उन्हें दंडित किया जाता। जिन्होंने प्रयास किया

अंतिम मैग्डलीन लॉन्ड्री 1996 में बंद हुई।

2017 में, गॉलवे काउंटी, टचूम में एक पूर्व कैथोलिक अविवाहित माताओं के घर के स्थान पर, एक परित्यक्त सेप्टिक टैंक में लगभग 800 बच्चों के अवशेष मिले।

मचान की वास्तुकला — स्त्री पतित के रूप में, बच्चा लज्जा के रूप में, आज्ञाकारिता मोक्ष के रूप में

यह इतिहास नहीं है। यह कल है। जीवित स्मृति में। पढ़ने वाले लोगों के जीवनकाल में

अटलांटिक दास व्यापार को चार शताब्दियों तक हाम के शाप के माध्यम से धार्मिक रूप से उचित ठहराया गया

तर्क सरल था।

उत्पत्ति की पुस्तक में, नूह ने अपने पुत्र हाम — या अधिक सटीक रूप से, हाम के पुत्र कनान — को शापित किया। शताब्दियों

अतः अफ़्रीकी दैवीय रूप से दासता के लिए नियत थे। ईश्वर ने उन्हें शापित किया था। उनका कालापन

यह हाशिये की व्याख्या नहीं थी। यह मुख्यधारा का धर्मशास्त्र था।

प्रमुख विश्वविद्यालयों के प्रोफ़ेसरों ने इसे पढ़ाया। प्रमुख चर्चों के बिशपों ने इसका उपदेश दिया। यह

चार सौ वर्ष तक, मचान ने वह नैतिक ढाँचा प्रदान किया जिसके भीतर लाखों मनुष्यों के साथ

उन्हें पकड़ा जा सकता था, जंजीरों में बाँधा जा सकता था, एक महासागर पार इतनी क्रूर परिस्थितियों में ले जाया जा सकता था कि यात्रा

दास व्यापार प्रणाली में कुल मृत्यु: चार शताब्दियों में 10–15 मिलियन।

मचान ने जहाज़ नहीं बनाए। लेकिन मचान ने जहाज़ बनाने वालों को बताया कि जो वे कर रहे थे

दासता समाप्त करने का आंदोलन भी धार्मिक प्रेरणा से था।

क्वेकर — एक छोटा ईसाई संप्रदाय जो मानता था कि हर व्यक्ति ईश्वर का आंतरिक प्रकाश धारण करता है — दासता को पाप के रूप में निंदा करने वाले पहले संगठित समूहों में से थे।

विलियम विल्बरफ़ोर्स, एक श्रद्धालु इवेंजेलिकल ईसाई और ब्रिटिश संसद के सदस्य, ने

उसने वही बाइबल पढ़ी जो बागान-मालिकों ने पढ़ी। उसी ईश्वर की पूजा की। उसी मचान का उपयोग किया

अफ़्रीकी अमेरिकी चर्च — स्वयं दासों द्वारा बनाया गया, गुप्त रूप से, जंगलों में, रात को

दासों ने उस धर्म को जो उनकी ज़ंजीरों को उचित ठहराने के लिए इस्तेमाल हुआ था, बदल दिया

यह संरचनात्मक दावे को कमज़ोर नहीं करता। इसकी पुष्टि करता है।

वही वास्तुकला, वही ग्रंथ, वही ईश्वर ने दासता का औचित्य और उसके उन्मूलन की माँग दोनों उत्पन्न किए

दास व्यापारी ने हाम का शाप पढ़ा और दैवीय अनुमति देखी।

उन्मूलनवादी ने वही बाइबल पढ़ी और दैवीय निषेध देखा।

दोनों पाठ ग्रंथ के प्रति वफ़ादार थे, क्योंकि ग्रंथ में दोनों हैं।

यही समस्या है। यही वास्तुकला अ उत्पन्न करती है। यही वास्तुकला अ हमेशा उत्पन्न करेगी

आधुनिक मचान

ताइपिंग विद्रोह, 1850–1864। हॉन्ग शिउक्वान नामक व्यक्ति, दक्षिणी चीन में रहते हुए, एक दर्शन

युद्ध चौदह वर्ष चला। पूरे प्रांत जनरहित हो गए। जो शहर सदियों से खड़े थे

अनुमानित मृत: 20–30 मिलियन। निरपेक्ष संख्या में मानव इतिहास का सबसे भीषण धार्मिक संघर्ष

बीस से तीस करोड़ लोग। क्योंकि एक व्यक्ति ने एक कथित रहस्योद्घाटन देखा जिसे सत्यापित नहीं किया जा सकता था

माफ़ीनामा लिखने वाला कहेगा: वह असली ईसाई धर्म नहीं था। हॉन्ग शिउक्वान भ्रमित था। उसने ग़लत पढ़ा

संरचनात्मक उत्तर: कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता। वास्तुकला अ ने उसे सक्षम किया। जिस व्यवस्था की सत्ता

हॉन्ग शिउक्वान ने दावा किया ईश्वर ने उससे बात की। मूसा ने भी। मुहम्मद ने भी। जोसेफ़ स्मिथ ने भी।

वास्तुकला उन्हें अलग बताने का कोई संरचनात्मक परीक्षण प्रदान नहीं करती। केवल परंपरा का आह्वान

वास्तुकला ब हॉन्ग शिउक्वान उत्पन्न नहीं कर सकती।

स्वयंसिद्धियों को निजी रहस्योद्घाटन के रूप में दावा नहीं किया जा सकता। केवल परीक्षित।

एक व्यक्ति जो कहता है "ईश्वर ने मुझे बताया मैं ईसा का भाई हूँ" युद्ध शुरू कर सकता है।

एक व्यक्ति जो कहता है "मैंने एक नई स्वयंसिद्धि निकाली" को गणित दिखाना होगा, किल स्विच पार करने होंगे

व्यवस्था भरोसे पर नहीं चलती। परीक्षण पर चलती है।

———

आर्मीनियाई नरसंहार, 1915–1923: 1–1.5 मिलियन मृत।

ऑटोमन सरकार ने आर्मीनियाई जनसंख्या के निर्वासन का आदेश दिया। "निर्वासन" शब्द

पुरुषों को उनके परिवारों से अलग कर उनके गाँवों के बाहर समूहों में गोली मारी गई। स्त्रियाँ, बच्चे

भोजन नहीं दिया गया। पानी नहीं दिया गया। पहरेदारों ने किसी को रुकने नहीं दिया। जो गिरे

स्त्रियों ने आगे बढ़ने के बजाय फ़रात में डूबकर जान दी। माताओं ने अपने बच्चों को

छँटाई तंत्र धार्मिक और जातीय था: ईसाई आर्मीनियाई उन्मूलन के लिए चिह्नित

———

होलोकॉस्ट, 1933–1945: 6 मिलियन यहूदी हत्या।

मचान का योगदान प्रत्यक्ष आदेश नहीं बल्कि उन्नीस शताब्दियों में संरचनात्मक तैयारी

योहन का सुसमाचार यहूदियों को शैतान की संतान के रूप में पहचानता है। चर्च के पिताओं ने

1215 के चौथे लेटरन कौंसिल ने यहूदियों को विशिष्ट वस्त्र पहनना अनिवार्य किया — एक आवश्यकता

मार्टिन लूथर का "यहूदियों और उनके झूठों पर", 1543 में प्रकाशित, ने सिफ़ारिश की

मचान ने ट्रिगर नहीं खींचा। मचान ने 1,900 वर्ष यूरोप को सिखाया कि

उन्नीस शताब्दियों के उपदेश। उन्नीस शताब्दियों का धर्मशास्त्र। उन्नीस शताब्दियों का वही तंत्र

जब समय आया, ट्रिगर स्वयं खिंच गया।

———

भारत विभाजन, 1947: 1–2 मिलियन मृत। 12–15 मिलियन विस्थापित। सबसे बड़ा सामूहिक प्रवास

जब अंग्रेज़ भारत छोड़कर गए, उन्होंने उपमहाद्वीप को दो राष्ट्रों में बाँटा: भारत, हिंदू बहुमत

हिंसा तत्काल और भारी थी।

ट्रेनें स्टेशनों पर केवल शव लेकर पहुँचीं। पूरे डिब्बे। सैकड़ों शव। हिंदू

कुछ स्टेशनों पर, प्लेटफ़ॉर्म के कर्मचारी ट्रेन को देखने से पहले सूँघ सकते थे। दरवाज़े

अमृतसर में, एक ट्रेन आई जिसके किनारे पर लिखा था: "पाकिस्तान की ओर से उपहार"

हर दिशा में शव। हत्या सममित थी। घृणा सममित थी। मचान

सीमा पर सवाल यह नहीं था कि तुमने क्या किया। यह नहीं था कि तुमने किसे नुकसान पहुँचाया।

सवाल था तुम क्या मानते हो।

मचान ने रेखा खींची। लोग उस पर मरे।

———

1980–2026

आँकड़े अभी भी जमा हो रहे हैं जब यह वाक्य लिखा जा रहा है।

———

ईरान-इराक़ युद्ध, 1980–1988: दस लाख मृत। ईरान ने युद्ध को जिहाद — पवित्र युद्ध, ईश्वर द्वारा

———

दूसरा सूडानी गृहयुद्ध, 1983–2005: 2 मिलियन मृत। खरतूम में मुस्लिम बहुमत सरकार ने

———

बोस्निया, 1992–1995: 100,000 मृत। स्रेब्रेनित्सा में, जुलाई 1995 में, संयुक्त राष्ट्र ने घोषित किया

रवांडा, 1994: 100 दिनों में 800,000 मृत।

एक 80 प्रतिशत कैथोलिक राष्ट्र। हूटू और तुत्सी दोनों ने एक ही मचान साझा किया — वही चर्च, वही पैरिश, वही संस्कार।

यह अध्याय दावा नहीं करता कि मचान ने रवांडा नरसंहार किया।

यह अध्याय संरचनात्मक रूप से कुछ बदतर दावा करता है: मचान इसे रोकने में विफल रहा।

अस्सी प्रतिशत जनसंख्या ने वही नैतिक व्यवस्था साझा की, वही चर्चों में गई,

देश में सबसे व्यापक साझा नैतिक व्यवस्था ने कोई मापनीय ब्रेकिंग बल उत्पन्न नहीं किया

चर्चों का उपयोग हत्या स्थलों के रूप में किया गया — चर्च होने के बावजूद नहीं बल्कि इसलिए। तुत्सी ने शरण ली

न्तारामा के चर्च में, अनुमानत: 5,000 लोग इमारत के भीतर मारे गए। न्यांगे पैरिश के एक पादरी — अतानास सिरोम्बा — ने शरणार्थियों पर चर्च को बुलडोज़र से ढहाने का आदेश दिया।

मचान ने रविवार को छत पकड़ी। मचान ने सोमवार को ब्लेड पकड़ा।

अफ़ग़ानिस्तान: तालिबान, 1996–2021, और 2021 से वर्तमान। 170,000 मृत्यु।

जब 2021 में तालिबान ने देश पुन: लिया, स्त्रियाँ जो डॉक्टर, प्रोफ़ेसर और न्यायाधीश थीं

बामियान बुद्ध दो विशाल मूर्तियाँ थीं जो मध्य अफ़ग़ानिस्तान में एक चट्टान में तराशी गई थीं —

आईएसआईएस, 2013–2019।

अगस्त 2014 में, लड़ाकों ने उत्तरी इराक़ के सिंजार क्षेत्र में प्रवेश कर यज़ीदियों को पकड़ लिया

बारह वर्ष से अधिक उम्र के पुरुषों और लड़कों को स्त्रियों और लड़कियों से अलग किया गया। पुरुषों को खेतों में ले जाया गया और

स्त्रियों और लड़कियों को बंदी केंद्रों में ले जाया गया, पंजीकृत किया गया, और वितरित किया गया। वितरित

नौ वर्ष तक की लड़कियों को लड़ाकों को संपत्ति के रूप में आवंटित किया गया। एक मूल्य सूची बनाई गई। बड़ी उम्र

मूल्य सूची छिपाई नहीं गई। दाबिक़, आईएसआईएस की आधिकारिक पत्रिका में उद्धरणों के साथ प्रकाशित की गई

ग्रंथ ने गोला-बारूद प्रदान किया। वास्तुकला ने भरा। वास्तुकला ने निशाना साधा। वास्तुकला ने

नाइजीरिया: बोको हराम, 2009–वर्तमान। 300,000 मृत। नाम का अर्थ है "पश्चिमी शिक्षा लड़ाकों को। कुछ को आत्मघाती हमलावर के रूप में उपयोग किया गया। सौ से अधिक कभी नहीं मिलीं। उनके माता-पिता

म्यांमार: रोहिंग्या, 2016–वर्तमान। दसियों हज़ार मारे गए। दस लाख से अधिक विस्थापित। बौद्ध

इज़रायल-फ़लस्तीन। जारी। वही ईश्वर। वही भूमि। वही वादा, दो अलग-अलग लोगों से, उसी मचान द्वारा।

7 अक्टूबर 2023: हमास लड़ाकों ने सीमा पार कर लगभग 1,200 इज़रायली नागरिकों की हत्या

ग़ज़ा में बाद के सैन्य अभियान ने दसियों हज़ार फ़लस्तीनियों को मारा, जिनमें

दोनों लोग उसी भूमि पर दावा करते हैं क्योंकि उसी ईश्वर ने, उसी परंपरा में, दोनों से वादा किया

रेखा उन बच्चों के रक्त में भीगी है जिन्होंने कभी वह ग्रंथ नहीं पढ़ा जिसने उसे खींचा।

मार्च 2026। यह वाक्य। अभी। मचान चालू है। ब्लेड ग्रंथ में है। रक्त

केवल 1980 के बाद का रूढ़िवादी कुल: 5–7 मिलियन मृत उन संघर्षों में जहाँ धार्मिक पहचान प्राथमिक या महत्वपूर्ण विभाजन रेखा थी।

संपूर्ण दर्ज इतिहास का रूढ़िवादी कुल: महत्वपूर्ण धार्मिक कारण या विभाजन रेखा वाले संघर्षों के शैक्षिक अनुमान 30 से 200 मिलियन मृतकों के बीच हैं।

सबसे रूढ़िवादी अनुमान भी — यदि हर विवादित श्रेय हटा दिया जाए, हर अस्पष्टता

दसियों करोड़ खिड़कियाँ। प्रत्येक एक दृष्टिकोण। प्रत्येक अपुनरावर्ती। प्रत्येक एक बिंदु

बंद।

आदत द्वारा वर्गीकृत। मचान द्वारा चिह्नित। ब्लेड द्वारा बंद।

मचान ने छत पकड़ी। मचान ने ब्लेड पकड़ा। दस्तावेज़ अस्पष्ट नहीं है।

———

बच्चे

और फिर वे बच्चे हैं जिनकी रक्षा मचान को करनी चाहिए थी।

कैथोलिक चर्च का यौन शोषण संकट एक कलंक नहीं है। कलंक एक घटना है। यह

पैटर्न हर जगह एक ही था। एक पादरी ने बच्चे का शोषण किया। बच्चे ने बताया। संस्था ने

जॉन जे रिपोर्ट ने केवल संयुक्त राज्य में 4,392 आरोपित पादरियों की पहचान की, 10,000 से अधिक

तीन लाख तीस हज़ार बच्चे। एक देश में। एक मचान के तले।

छुपाव प्रक्रिया 4 और 6 का संयुक्त कार्य था — नैतिक अनुज्ञा और ज्ञानमीमांसात्मक बंद

बच्चे को चुप कराया जा सकता था। बच्चे को बदनाम किया जा सकता था। बच्चे को स्थानांतरित किया जा सकता था। पादरी को दूसरे पैरिश में भेजा जा सकता था — नए बच्चों के साथ जो उस पर भरोसा करते थे क्योंकि वास्तुकला ने उन्हें भरोसा करने को कहा था।

बोस्टन के कार्डिनल बर्नार्ड लॉ, जिनके आर्कडायोसिस ने दशकों तक व्यवस्थित रूप से शोषक पादरियों को पुनर्नियुक्त किया, को दंडित नहीं किया गया।

उन्हें पदोन्नत किया गया। उन्हें रोम में एक प्रतिष्ठित पद और पापल कार्यवाही में एक औपचारिक भूमिका दी गई

वास्तुकला ने छुपाव को पुरस्कृत किया। वास्तुकला ने उस व्यक्ति को पदोन्नत किया जिसने व्यवस्था की रक्षा की

मचान बच्चों को नहीं देख सका क्योंकि बच्चों को देखना मचान को मार देता।

एक व्यवस्था जो अपने बच्चों का बलिदान करेगी बजाय यह स्वीकार करने के कि वह ग़लत है,

---

इमारत स्वयं

"फलो-फूलो और पृथ्वी को भर दो, और उसे अधीन करो: और समुद्र की मछलियों पर प्रभुत्व

प्रभुत्व धर्मशास्त्र ने मानवता को पृथ्वी से अलग किया। उसके भीतर नहीं बल्कि ऊपर। उसका भाग नहीं

सदियों तक, इस आयत ने वह नैतिक अनुमति प्रदान की जिसके भीतर प्रकृति का शोषण

वन पारिस्थितिकी तंत्र नहीं थे। संसाधन थे। नदियाँ जीवित प्रणालियाँ नहीं थीं। शक्ति

पृथ्वी मानव उपयोग के लिए थी, क्योंकि ईश्वर ने कहा था। अधीन करो। प्रभुत्व रखो। लो जो

परिणाम की गणना नहीं की गई क्योंकि वास्तुकला ने कहा परिणाम मायने नहीं रखता

आयत अभी भी ग्रंथ में है। ढाँचा वापस नहीं लिया गया। ग्रह एक संसाधन नहीं

मचान ने एक और ब्लेड पकड़ा — अन्य खिड़कियों की ओर नहीं बल्कि इमारत की ओर ही।

इससे पहले कि तुम इस बोझ के साथ बैठ सको, मचान के पास एक अंतिम बचाव है। वह कहता है: हम

अध्याय 9

प्रति-परीक्षण

धर्मनिरपेक्ष विचारधाराओं ने अधिक मारा। स्तालिन का शुद्धिकरण: 6–20 मिलियन। माओ की

यह आपत्ति सही है। और यह संरचनात्मक दावे को सिद्ध करती है।

मार्क्सवाद-लेनिनवाद वास्तुकला अ है। सत्ता ईश्वर नहीं। सत्ता ऐतिहासिक भौतिकवाद

पाँच चरण समान रूप से काम करते हैं। घोषणा। लेखन। व्याख्या। विचलन — चीन-सोवियत विभाजन, ट्रॉट्स्की बनाम स्तालिन, माओवाद बनाम लेनिनवाद। पतन।

सात प्रक्रियाएँ समान रूप से काम करती हैं। पहचान विलय: तुम सर्वहारा हो। अंतर्समूह पवित्रीकरण: श्रमिक वर्ग इतिहास का इंजन। बहिर्समूह चिह्नांकन: बुर्जुआ वर्ग शत्रु। नैतिक अनुज्ञा: हिंसा ऐतिहासिक आवश्यकता। सीलबंद लूप: असहमति प्रतिक्रांतिकारी।

फ़ासीवाद वास्तुकला अ है। राष्ट्रवाद वास्तुकला अ है। उपभोक्ता पूँजीवाद, जब यह बन जाता है

कोई भी व्यवस्था जो अपनी नैतिकता वास्तविकता की अपरिवर्ती संरचना से बाहर की सत्ता से व्युत्पन्न करती है

बल-श्रृंखला को इसकी परवाह नहीं कि सत्ता को क्या कहा जाता है।

बल-श्रृंखला को इसकी परवाह है कि सत्ता की व्याख्या की जा सकती है।

बीसवीं शताब्दी ने नहीं दिखाया कि धर्म विशिष्ट रूप से खतरनाक है। बीसवीं शताब्दी ने

धर्म सबसे पुराना, सबसे व्यापक, सबसे स्थायी कार्यान्वयन है। धर्मनिरपेक्ष विचारधाराएँ

मचान छत और ब्लेड दोनों पकड़ता है। धर्मनिरपेक्ष विचारधाराओं ने केवल ब्लेड पकड़ा। वे गिर गईं

संरचनात्मक दावा यह नहीं है: धर्म मारता है।

संरचनात्मक दावा यह है: कोई भी नैतिकता जो वास्तविकता की अपरिवर्ती संरचना से व्युत्पन्न नहीं,

शवों की गिनती प्रमाण है।

वास्तुकला कारण है।

वास्तुकला हमेशा कारण है।

———

तुमने इसे ऊपर से देखा — संरचना, तंत्र, दस्तावेज़, प्रति-परीक्षण। आवाज़

अब नीचे उतरो। एक सुबह में। एक शरीर में। उस कमरे में जहाँ वास्तुकला आती है और

अध्याय 10

क्या तुम्हें यक़ीन है?

वास्तुकला का वर्णन किया गया। तंत्र प्रलेखित किया गया। दस्तावेज़ मापा गया

लेकिन संख्याएँ अमूर्तन हैं। वास्तुकला एक चित्र है।

मचान जो उत्पन्न करता है वह चित्र नहीं है। वह ज़मीन पर शरीर है।

छह शरीर। छह सामान्य सुबहें। छह सत्ताएँ।

एक परिणाम।

———

तुम्हारी उम्र पंद्रह है।

तुम अपने छोटे भाई का हाथ पकड़े हो। तुम्हारी माँ तुम्हारे पीछे है। एक सैनिक इशारा कर रहा है। बाएँ या दाएँ। पुरुष और लड़के बाएँ। स्त्रियाँ और छोटे बच्चे दाएँ।

तुम्हारी माँ भाई को खींच रही है। सैनिक तुम्हें खींच रहा है। तुम्हारी माँ चीख़ रही है। तुम्हारा भाई रो रहा है। तुम पंद्रह साल के हो और नहीं जानते किस तरफ़ जीवित रहना है।

स्रेब्रेनित्सा, जुलाई 1995। आठ हज़ार बोस्नियाई मुस्लिम पुरुषों और लड़कों को उनके परिवारों से अलग किया गया

सत्ता मचान थी।

शरीर ज़मीन पर है।

———

तुम्हारी उम्र बाईस है।

शनिवार की रात है। तुम एक नाइटक्लब में हो। बास तुम्हारी छाती में है। तुम्हारे दोस्त

उमर मतीन ने 12 जून 2016 को ऑर्लैंडो में पल्स नाइटक्लब में प्रवेश किया और 49 लोगों को मारा। उसने

मचान का बहिर्समूह चिह्नांकन — समलैंगिकता एक घृणित कर्म, हर इब्राहीमी ग्रंथ द्वारा घोषित

मतीन ने ट्रिगर खींचा। ग्रंथों ने बंदूक भरी।

सत्ता धार्मिक थी।

शरीर ज़मीन पर है।

———

तुम अपनी बहन को पत्र लिख रहे हो।

तुम्हारी उम्र तेईस है। तुम चार साल से इस कोठरी में हो। काग़ज़ तस्करी से आया है। क़लम

जुलाई 1988 में, सर्वोच्च नेता ने राजनीतिक क़ैदियों के निष्पादन का फ़तवा जारी किया।

अनुमान 2,800 से 30,000 तक हैं। शव सामूहिक कब्रों में दफ़नाए गए। परिवारों को

अगस्त 2025 में, शासन ने दफ़न स्थलों को समतल करने के लिए बुलडोज़र भेजे। मारने से संतुष्ट न होकर

सत्ता धार्मिक थी।

शरीर ज़मीन पर है।

———

तुम एक ट्रेन में हो।

तुम्हारी पत्नी बगल में है। तुम्हारी बेटी उसकी गोद में है। उम्र तीन साल। एक कपड़े की गुड़िया पकड़े

तुम्हारे संदूक में: कपड़ों के दो जोड़े, एक खाना पकाने का बर्तन, तुम्हारी पत्नी के शादी के गहने छिपाए

अगस्त 1947। शरणार्थियों को ले जा रही ट्रेनों पर नई सीमा के दोनों ओर भीड़ ने हमला किया। हिंदुओं

सत्ता धार्मिक, द्विपक्षीय, सममित थी। हिंदू और मुस्लिम और सिख और ईसाई।

शरीर ज़मीन पर है।

———

तुम धान के किसान हो।

तुम रोहिंग्या हो। तुमने राखीन राज्य के इस गाँव में पूरी ज़िंदगी बिताई है। तुम्हारे पिता

तुम एक बौद्ध देश में मुस्लिम हो। तुम कभी नागरिक नहीं रहे। तुम्हारे बच्चे कभी

सैनिक 5:15 पर पहुँचते हैं।

अगस्त 2017 में, म्यांमार सेना ने राखीन राज्य में ऑपरेशन शुरू किए। गाँवों को घेरा गया

सत्ता धार्मिक थी।

शरीर ज़मीन पर है।

———

उसका नाम मिखाइलो है।

उम्र बासठ। शास्त्रीय संगीत पसंद करता है। आज वह अपने कुत्ते को घुमा रहा है। कुत्ता एक छोटा भूरा

गोली उसकी पीठ में घुसती है। वह आगे गिरता है। कुत्ता पट्टा खींचता है। पट्टा तना और

उसका शरीर बुचा की एक सड़क पर उनतीस दिन पड़ा रहता है। कुत्ता नहीं जाता। कुत्ता

शरीर ज़मीन पर है।

हर ब्लेड को धर्मग्रंथ की ज़रूरत नहीं। सत्ता बदली। शरीर नहीं बदला।

———

छह शरीर। छह सामान्य सुबहें। छह सत्ताएँ।

इनमें से पाँच सत्ताएँ धार्मिक थीं। एक धर्मनिरपेक्ष। शरीर हर बार एक ही था।

सत्ता छह बार बदली। शरीर एक बार भी नहीं बदला।

———

यह कभी केवल धर्म नहीं था। कभी केवल राष्ट्रवाद नहीं। कभी केवल विचारधारा नहीं।

यह हमेशा यक़ीन था।

तुम्हारा यक़ीन। अपरीक्षित। अजाँचा। अप्रश्नित।

यक़ीन कि तुम सही हो। और वे ग़लत। और क्योंकि वे ग़लत हैं, कुछ

———

उस चीज़ का नाम लो जिस पर तुम विश्वास करते हो। जिसके बारे में तुम्हें सबसे ज़्यादा यक़ीन है।

अब उसके सामने ज़मीन पर एक शरीर रखो। एक असली व्यक्ति। मरा हुआ क्योंकि किसी ने वह

शरीर को देखो। फिर विश्वास को देखो।

क्या विश्वास शरीर के लायक है?

अगर हाँ — तुम पत्थर हो, रस्सी हो, गोली हो, बम हो, प्लास्टिक की चाबी हो, फ़तवा हो,

अगर नहीं — तुमने अभी वह एकमात्र काम किया जो इस किताब ने माँगा।

तुमने शरीर को विश्वास से पहले रखा।

——

शरीर जीतता है। शरीर हमेशा जीतता है। शरीर एकमात्र सत्ता है जो

शरीर केवल यह दावा करता है कि वह यहाँ है।

शरीर पर भरोसा करो।

भाग तीन

नैतिकता

धर्म के बाद की दुनिया में जीना और होना।

तुमने अभी शरीर को विश्वास से पहले रखा।

यह भारी है। होना चाहिए। दस्तावेज़ भारी है। यह किताब अन्यथा दिखावा नहीं करेगी।

मचान ने छत पकड़ी। छत असली थी। हर शुक्रवार, हर रविवार, हर शब्बत को इकट्ठा होने वाला समुदाय — वह असली था। गीत, प्रार्थना, पड़ोसी का हाथ — वह असली था।

जो आगे है वह बोझ मिटाने के लिए नहीं। यह वह है जो उगता है उस खाली जगह में

यह ख़ामोशी से शुरू होता है। एक सरल सवाल से: जब कोई आदेश नहीं दे रहा तो अर्थ कहाँ से आता है

अध्याय 11

अर्थ बिना हठधर्मिता

जब नैतिकता आदेश पर टिकी नहीं रहती, एक गहरा सवाल उभरता है: अर्थ कहाँ से

बहुत लोगों के लिए, अर्थ विश्वास से बँधा रहा। उद्देश्य दिया गया, पाया नहीं। दिशा

यह अध्याय विपरीत तर्क देता है। बाहरी सत्ता गिरने पर अर्थ ग़ायब नहीं होता

हठधर्मिता — अखंडनीय सत्य के रूप में सौंपा गया विश्वास — आदेश द्वारा अर्थ प्रदान करती है। बताती है क्या मायने रखता है, क्यों मायने रखता है, और हमें क्या करना चाहिए।

जब अर्थ बाहर से थोपा जाता है, वह केवल तब तक टिकता है जब तक विश्वास टिकता है। एक गंभीर संदेह

जीवंत अर्थ भिन्न तरीके से काम करता है। पूर्ण रूप से नहीं आता। जुड़ाव से उभरता है

एक जुड़ी दुनिया में, अर्थ आज्ञाकारिता का पुरस्कार नहीं। भागीदारी का परिणाम है।

कार्य मायने रखते हैं क्योंकि वे साझा दुनिया बदलते हैं। शब्द मायने रखते हैं क्योंकि वे समझ बनाते हैं

मेरे बच्चे के साथ सुबह की बातचीत मायने रखती है — इसलिए नहीं कि कोई ब्रह्मांडीय दर्शक देख रहा

काम पर मेरा निर्णय मायने रखता है — इसलिए नहीं कि न्याय के दिन तोला जाएगा, बल्कि क्योंकि यह बदलता है

अर्थ वहाँ प्रकट होता है जहाँ प्रभाव होता है। यह अर्थ को कम नहीं अधिक कठिन बनाता है।

कोई बाहरी सत्ता नहीं जिसे सौंपा जाए। कोई बहीखाता नहीं जो प्रयास को पुरस्कार से तोले। कोई वादा नहीं

केवल यह तथ्य है कि मैं जो करता हूँ मायने रखता है क्योंकि यह दूसरों की ज़िंदगियों में लहर बनकर फैलता है।

जब थोपा गया अर्थ गिर जाता है, अक्सर एक शून्य होता है।

वे संरचनाएँ जो कभी जीवन व्यवस्थित करती थीं जा चुकी हैं। ख़ालीपन हानि जैसा लग सकता है। जैसे खड़े

यह हानि नहीं है। यह तैयारी है।

आग के बाद जंगल के फ़र्श की कल्पना करो। पुराने पेड़ जा चुके। जो बचा है ख़ाली लगता है। लेकिन

ख़ालीपन अर्थ की अनुपस्थिति नहीं। उस अर्थ की अनुपस्थिति है जो कभी मेरा था ही नहीं।

———

शून्यवाद — कि कुछ भी मायने नहीं रखता — कहता है: बाहरी अर्थ के बिना, कुछ मायने नहीं

यह निष्कर्ष तभी निकलता है अगर अर्थ बाहर से ही आना चाहिए। अगर अर्थ भीतर से उभरता है —

चीज़ें मायने रखती हैं क्योंकि वे अनुभव को प्रभावित करती हैं। मायने रखती हैं क्योंकि भविष्य बनाती हैं।

अर्थ नाज़ुक नहीं। संरचनात्मक है। विश्वास डगमगाने पर नहीं गिरता। जड़ा हुआ है

किसी के नाम देने से पहले वहाँ था।

———

हठधर्मिता के बिना, जीवन उस तरह गंभीर हो जाता है जो हठधर्मिता ने कभी अनुमति नहीं दी।

कोई ब्रह्मांडीय दर्शक ऊपर से नहीं देख रहा। कोई अंतिम न्याय सब अस्पष्टता हल नहीं करेगा। कोई

मैं अभी जो करता हूँ, यहीं, इस शरीर से, वही सब कुछ है। मुझे एक जीवन मिला है। यही है

जो बचता है वह सामान्य जीवन है — गंभीर इसलिए नहीं कि देखा जा रहा, बल्कि क्योंकि असली है। मैं

उद्देश्य घोषित नहीं होता। पहचाना जाता है। देखभालकर्ता का उद्देश्य निर्भरता से उभरता है

मचान ने ऊपर से अर्थ का वादा किया।

ज़मीन नीचे से अर्थ प्रदान करती है।

दूसरा देखना कठिन है। खोना भी कठिन।

जो व्यक्ति जानता है वह दयालु क्यों है — क्योंकि अपरिवर्तनीय ह्रास के तहत जुड़ी ज़िंदगियों की ज्यामिति मचान गिरने पर नहीं गिरता। ज़मीन पहले थी। जो उससे उगता है वह

अध्याय 12

अंतिम नैतिकता

भाग दो में, मैंने कुछ महसूस किया। ज़मीन पर शव। ग्रंथ में ब्लेड। मचान

वह भावना भावुकता नहीं थी।

संरचनात्मक पहचान थी — मेरी चेतना यह दर्ज कर रही थी कि क्रूरता ग़लत थी, इसलिए नहीं कि

उस पहचान के नीचे एक ज्यामिति है। यह अध्याय उसे नाम देता है।

लेकिन पहले: मैं इसे महसूस कर ही कैसे पाया?

420 Code की शासी स्वयंसिद्धि एक चित्र से शुरू होती है। एक दर्पण की कल्पना करो — पूर्ण, अखंडित। अब उसी दर्पण की कल्पना करो जिसमें एक दरार है। दरार बहुत छोटी है। लेकिन पर्याप्त है।

लिखित रूप में, स्वयंसिद्धि है: $1 = 1 + 1 \times \varepsilon$। एक बराबर एक जमा एक गुणा एप्सिलॉन — जहाँ एप्सिलॉन सबसे छोटी संभव चीज़ है। आदर्श रूप से

दरार कहीं और से नहीं आई। दरार दर्पण का अपना कार्य है।

स्वयंसिद्धि जो कुछ उत्पन्न करती है उसके दो चेहरे हैं। कण और तरंग। पदार्थ और ऊर्जा। स्व और अन्य

मैं पुल डिज़ाइन कर सकता हूँ और सिम्फ़नी रच सकता हूँ।

मैं हर विकल्प की लागत गिन सकता हूँ और अक्षम्य को क्षमा कर सकता हूँ।

मैं तर्कसंगत उत्तर देख सकता हूँ और अतार्किक चुन सकता हूँ।

वह क्षमता ही हमें मनुष्य बनाती है। वह स्वयंसिद्धि एकमात्र खिड़की से स्वयं को अभिव्यक्त कर रही है

वही क्षमता जो मुझे अविश्वसनीय पर विश्वास करने देती है वही है जो मुझे

वही अतार्किक युग्मन जो किसी को स्वर्ग के नाम पर बच्चे से विस्फोटक बाँधने देता है

क्षमता तटस्थ है। दिशा मायने रखती है।

धर्म ने इस क्षमता को पकड़ा और मचान की ओर मोड़ दिया। अब कार्य है इसे पुनः प्राप्त करना

गंदा इंसान मत बनो। दयालु बनो।

वह अंतिम नैतिकता है।

यह नारा नहीं है।

यह एक ज्यामितीय परिणाम है — आकार का परिणाम, आदेश का नहीं — अपरिवर्तनीय ह्रास के तहत जुड़ी ज़िंदगियों के बारे में

नैतिकता उन्हीं स्वयंसिद्धियों से व्युत्पन्न है जो प्रकाश की गति और इलेक्ट्रॉन का द्रव्यमान व्युत्पन्न करती हैं

यह रहा व्युत्पत्ति का आकार। गणित नहीं — वह औपचारिक कार्य का है।

चरण 1। एक रिकॉर्ड मौजूद है। कुछ हो रहा है। यह धारणा नहीं। यह न्यूनतम

चरण 2। एक रिकॉर्ड के अस्तित्व के लिए, उसे शून्य से अलग पहचाना जाना चाहिए। सममिति वह स्थिति है

चरण 3। तो सममिति टूटती है। टूटनी चाहिए — टूटी। एक दरार। दरार असली है। दर्पण

चरण 4। टूटन बनी रहनी चाहिए — अन्यथा कुछ दर्ज नहीं होता। अगर टूटन बनी रहती है, तो

चरण 5। टूटन सीमित होनी चाहिए — असीमित टूटन सममिति को पूर्णतः मिटा देती है और

चरण 6। टूटी दुनिया का एक अंदर है। चेतना दुनिया में जोड़ी नहीं जाती। चेतना वह है

यहाँ एक टिप्पणी। चरण 6 इमारत का सबसे उजागर दावा है। अगर चेतना कुछ जोड़ा गया है

चरण 7। अगर अंदर एक टूटन से आता है, तो अंदर एक है। हर चेतन प्राणी एक खिड़की

चरण 8। ज़िंदगियाँ जुड़ी हैं और समय एक दिशा में चलता है। गलियारे अपने आप सिकुड़ते हैं। जो

चरण 9। गंदा इंसान मत बनो। दयालु बनो। आदेशित नहीं। व्युत्पन्न। एकमात्र स्थिर व्यवहार

हर चरण एक किल स्विच रखता है। हर चरण विफल हो सकता है। अगर चरण 6 विफल होता है, 7 गिरता है — लेकिन चरण

हर व्यक्ति का एक गलियारा है — वह भविष्यों का समूह जो अभी जहाँ खड़ा है वहाँ से पहुँचने योग्य है

स्वास्थ्य, शिक्षा, बचत और विकल्पों वाले युवा का चौड़ा गलियारा।

इस तरह सोचो। बीस में, बिना कर्ज़ और अच्छे स्वास्थ्य से, मैं लगभग कुछ भी बन सकता हूँ।

गलियारा अपने आप सिकुड़ता है। बिना प्रयास, बिना रखरखाव, संभावनाएँ बंद होती हैं। ह्रास

एक सतह है जिसके पार पुनर्प्राप्ति असंभव है। पार करो और कुछ भविष्य जा चुके।

स्थिर, शांत प्रयास गलियारे को अधिक प्रभावी ढंग से बनाए रखता है बनिस्बत वही प्रयास घबराहट में

अब वह परिणाम जो सब जोड़ता है। जब दो लोग जुड़े हैं — जब मेरा गलियारा

विवाह में दो लोगों की कल्पना करो। जब एक साथी निरंतर दयालुता से पेश आता है — स्थिर, न

दयालुता बलिदान नहीं। वह व्यवहार है जो दोनों गलियारे खुले रखता है। क्रूरता सिकोड़ती है

ज्यामिति को मेरे इरादों की परवाह नहीं।

वह मेरे प्रभाव को मापती है।

आज्ञा कहती है: दयालु बनो क्योंकि मैंने कहा।

व्युत्पत्ति कहती है: दयालु बनो क्योंकि अपरिवर्तनीय ह्रास के तहत जुड़ी ज़िंदगियों की ज्यामिति उत्पन्न करती है

पहली की पुनर्व्याख्या हो सकती है। दूसरी की नहीं।

शून्य से नौ चरण — इस आधार से कि एक रिकॉर्ड मौजूद है। हर चरण खंडनीय। हर

अंतिम नैतिकता आदेशित नहीं।

व्युत्पन्न है।

And it is free, forever, at the420code.org.

अध्याय 13

आत्म-धार्मिकता के बिना सुधार

अगर हानि भ्रम से उत्पन्न होती है न कि जन्मजात बुराई से, तो नैतिक श्रेष्ठता

यह इस पुस्तक में वर्णित दृष्टिकोण का एक शांत लाभ है।

कोई ऊँचा स्थान नहीं जहाँ से अलग खड़े होकर नीचे देखा जाए। कोई ब्रह्मांडीय छँटाई

यह हानि को क्षमा नहीं करता। प्रतिक्रिया बदलता है।

प्रतिक्रिया निंदा से सुधार की ओर बदलती है। घृणा से दृढ़ता की ओर। दंड से

गंभीरता बनी रहती है। प्रतिक्रिया में क्रूरता नहीं।

यह भेद किताब में लगभग किसी भी चीज़ से ज़्यादा मायने रखता है।

दृढ़ता और क्रूरता दूर से समान दिखती हैं। पास से हर तरह से भिन्न।

दृढ़ता सीमा रखती है क्योंकि सीमा साझा स्थान स्थिर करती है।

क्रूरता सीमा रखती है क्योंकि दंड देना सही लगता है।

पहला सबकी सेवा करता है। दूसरा अहंकार की।

सर्जन चीरता है चंगा करने के लिए। माता-पिता ना कहते हैं बचाने के लिए। समुदाय रोकता है सुरक्षा बनाए रखने के लिए।

सीमाएँ ज़रूरी रहती हैं।

परिणाम ज़रूरी रहते हैं।

जो बदलता है वह उनके पीछे का तर्क। सीमाएँ प्रभुत्व की अभिव्यक्ति नहीं रहतीं और

सुधार के स्तर हैं, और श्रेणीक्रम व्युत्पन्न है: हर स्तर अगले से पहले आज़माया जाना चाहिए।

पहला है संवाद।

अधिकांश असंरेखण ईमानदार आदान-प्रदान से सुधरता है। अधिकांश सुधार यहीं होना चाहिए

दूसरा है मध्यस्थता।

जब प्रत्यक्ष आदान-प्रदान विफल हो, तीसरा पक्ष स्थान सँभाले।

तीसरा है अलगाव।

जब निकटता नुकसान पहुँचाए, दूरी दोनों गलियारे बचाती है।

चौथा है प्रतिबंध।

जब किसी के कार्य लगातार साझा स्थान को नुकसान पहुँचाएँ, उसकी कार्य क्षमता

पाँचवाँ और अंतिम है निष्कासन।

एक खिड़की का स्थायी बंद होना। यह स्तर सबसे प्रतिबंधित और सबसे सावधानी से

हमेशा वह न्यूनतम स्तर जो स्थिर करे। हमेशा। जब निचला काम करे तो ऊपर कूदना

वास्तुकला अ के तहत, असफलता एक फ़ैसला है। तुमने ग़लत किया। तुम ग़लत हो। मचान तुम पर छाप लगाता है और छाप मिटती नहीं।

यह आत्म-विनाश का कारण नहीं बल्कि समायोजन का अवसर बन जाता है।

आत्म-धार्मिकता पूर्णता माँगती है। सुधार अपूर्णता स्वीकार करता है और जो वास्तव में है उसके साथ काम करता है

मुझे अच्छा होने की ज़रूरत नहीं। मुझे नुकसान के बारे में ईमानदार होने और मरम्मत करने को तैयार होने की ज़रूरत है।

अभ्यास के लिए नैतिक वीरता नहीं चाहिए। समझ और कार्य के बीच संगति चाहिए

अध्याय 14

शरीर बोसूला के रूप में

यहाँ किताब सैद्धांतिक होना बंद कर व्यावहारिक हो जाती है। निर्देश नहीं।

औपचारिक कार्य में, प्रचालक कोई भी प्रणाली है जो अंत:क्रिया के माध्यम से अपरिवर्तनीय अभिलेख लिखती है

मैं वह बिंदु हूँ जहाँ ब्रह्मांड स्वयं के प्रति सचेत होता है। पूर्णत: नहीं। वैश्विक रूप से नहीं। स्थानीय।

इसका अर्थ है कि मैं बाहर से दुनिया देखने वाला दर्शक नहीं हूँ।

मैं दुनिया हूँ, देख रही।

वही भौतिकी जो कणों, क्षेत्रों और बलों के व्यवहार का वर्णन करती है, वही

मैं भौतिकी हूँ, एक ऐसे शरीर के माध्यम से अभिव्यक्त जो स्वयं पर चिंतन कर सकता है।

अध्याय 12 ने गलियारे का वर्णन किया — वह भविष्यों का समूह जो जहाँ मैं खड़ा हूँ वहाँ से पहुँचने योग्य।

लेकिन एक संरचनात्मक तथ्य बेकार है अगर मैं उसे पढ़ नहीं सकता। अगर शरीर कम्पास है, तो कम्पास को

शरीर हिसाब रखता है। रूपक के रूप में नहीं। मापन के रूप में।

डायल पर ये चार रीडिंग हैं। इन्हें चिकित्सा उपकरण या तकनीकी प्रशिक्षण की ज़रूरत नहीं

उपयोगिता: उपयोगी आउटपुट उत्पन्न करने की क्षमता।

जब यह उच्च है, जो मैं करता हूँ अपने से परे किसी चीज़ से जुड़ता है। शिक्षक जिसके छात्र सीख रहे

तंत्रिका लचीलापन: बिना टूटे व्यवधान सहने की क्षमता।

जब लचीलापन उच्च है, आश्चर्य सँभाले जा सकते हैं। जो व्यक्ति नौकरी खोकर सोच सकता है

दीर्घायु भार: संचित अपरिवर्तनीय लागत।

हर चोट जो पूरी तरह ठीक नहीं हुई। हर हानि जिसने परिदृश्य स्थायी रूप से बदल दिया। एक घुटना

ईमानदार आत्म-दृष्टि: ईमानदार आत्म-मूल्यांकन की क्षमता।

मुख्य मापक। इसके बिना, अन्य तीन अदृश्य हैं। जो देख नहीं सकता उसे बनाए नहीं रख सकता

इन चारों को खुला रखो। वही अभ्यास है। पूर्ण रूप से नहीं। वीरतापूर्ण नहीं। स्थिर। ईमानदारी से

एक व्यावहारिक परिणाम है जो अधिकांश लोग बहुत देर से सीखते हैं।

जब चारों रीडिंग ईमानदार हों, वे कभी-कभी एक ऐसा फ़ैसला देती हैं जो स्वीकार करना कठिन है।

जब कोई व्यवस्था देती कम है और लेती ज़्यादा — जब भागीदारी की लागत प्रतिफल से अधिक हो और सुधार

मैं एक ऐसी वास्तुकला से बातचीत नहीं करता जो ठीक नहीं हो सकती।

मैं मचान को अपना शरीर देनदार नहीं हूँ।

यह रिश्तों, संस्थाओं, नौकरियों, विचारधाराओं और धर्मों पर लागू होता है।

परीक्षण संरचनात्मक है, भावनात्मक नहीं।

सवाल यह नहीं कि मुझे बुरा लगता है। सवाल है कि व्यवस्था की वास्तुकला

छोड़ना असफलता नहीं। छोड़ना यह पहचान है कि कुछ स्थितियाँ अपरिवर्तनीय हैं और

सोओ। चलो। खाओ। साँस लो।

ये जीवनशैली सलाह नहीं। ये न्यूनतम रखरखाव शर्तें हैं एक ऐसे प्रचालक के लिए जिसे

शरीर की उपेक्षा करो और श्रृंखला शुरू होती है।

जल्दी रखरखाव करो। लगातार करो। जल्दी रखरखाव की लागत उस लागत का अंश है

शरीर कम्पास है। भरोसा करो।

इसलिए नहीं कि शरीर हमेशा सही है। क्योंकि शरीर हमेशा यहाँ है।

और *यहाँ* वह एकमात्र जगह है जहाँ से मैं कार्य कर सकता हूँ।

अध्याय 15

अन्य के बिना जीना

इस बिंदु पर कुछ नया जोड़ने की ज़रूरत नहीं।

इस पुस्तक का कार्य स्पष्टीकरण था, निर्देश नहीं। जो शेष है वह कोई सिद्धांत नहीं

"अन्य" के बिना जीने का अर्थ भिन्नता, संघर्ष या असहमति से इनकार नहीं

इसका अर्थ है भिन्नता को उससे अधिक गहरा दर्जा देना बंद करना जिसकी वह हक़दार है।

———

जब अलगाव शुरुआती बिंदु नहीं रहता, कुछ सूक्ष्म बदलता है।

लोगों से पहले श्रेणियों के रूप में नहीं मिला जाता — विश्वासी, संदेहवादी, सहयोगी, शत्रु, अजनबी

मैं अभी भी भिन्नताएँ देखता हूँ। अभी भी मूल्यांकन करता हूँ।

जो ग़ायब होता है वह निर्णय के नीचे की परत — कि भिन्नता गहराई तक

भिन्नता रहती है। दूरी विलीन होती है।

———

सबसे पहले व्यावहारिक परिणामों में से एक बेहतर तर्क नहीं, बल्कि बेहतर सुनना है।

जब दूसरे व्यक्ति को विरोधी शक्ति नहीं माना जाता, असहमति अपना ख़तरा खो देती है। सुनना

यह सहमति की गारंटी नहीं देता। विनाश के बिना जुड़ाव की गारंटी देता है।

———

संघर्ष ग़ायब नहीं होता।

हित अभी भी टकराते हैं। मूल्य अभी भी भिन्न होते हैं। हानि अभी भी होती है।

जो ग़ायब होता है वह विनाश का तर्क — कि समस्या इसलिए है क्योंकि दूसरा व्यक्ति

दृढ़ कार्य संभव रहता है। घृणा अनावश्यक हो जाती है।

———

शायद सबसे मुक्तिदायक परिणाम आत्म-धार्मिकता का विलय है।

आत्म-धार्मिकता विरोध पर निर्भर है। इसे किसी का गहराई से ग़लत होना चाहिए ताकि कोई एक बार मूलभूत अन्यता विलीन हो जाए, आत्म-धार्मिकता अपना आधार खो देती है।

मैं बिना अतिशयोक्ति के निर्णायक रूप से कार्य कर सकता हूँ।

मैं बिना तिरस्कार के सीमाएँ रख सकता हूँ।

मैं हानि का विरोध कर सकता हूँ बिना हानि पहुँचाने वाले की मनुष्यता मिटाए।

शक्ति रहती है। क्रूरता नहीं रहती।

———

अन्य के बिना जीने में दुनिया बचाना शामिल नहीं। इसमें उस पर ध्यान देना शामिल है जो

मेरे शब्द इस बातचीत को कैसे बदलते हैं?

मेरे चुनाव इस स्थिति को कैसे आकार देते हैं?

यह ज़िम्मेदारी को ज़मीनी रखता है। पक्षाघात और भव्यता दोनों रोकता है।

नैतिक पूर्णता की कल्पना को नैतिक ध्यान के अभ्यास से बदलता है।

और नैतिक ध्यान सबके लिए उपलब्ध है, हर दिन, बिना विशेष प्रशिक्षण, बिना संस्था

———

जब करुणा पहचान से नहीं बल्कि समझ से उत्पन्न होती है, उसे घोषित करने की ज़रूरत नहीं

कोई दर्शक नहीं जिसे मनाना हो। कोई सद्गुण नहीं जिसका प्रदर्शन करना हो।

करुणा सामान्य हो जाती है — स्वर से, संयम से, समय से,

वह स्वयं की घोषणा नहीं करती। काम करती है।

———

घृणा को दूरी चाहिए।

जब दूसरा व्यक्ति सबसे मूलभूत अर्थ में अन्य नहीं रहता, घृणा को जड़ पकड़ने की जगह नहीं मिलती

क्रोध अभी भी उठ सकता है। शोक अभी भी उठ सकता है। दृढ़ कार्य अभी भी ज़रूरी हो सकता है।

लेकिन घृणा मिटती है।

इसलिए नहीं कि दबाई गई। क्योंकि अब तर्कसंगत नहीं रही।

———

अन्य के बिना जीना संत बनना नहीं। संगत बनना है।

समझ और कार्य के बीच संगत।

स्वहित और साझी दुनिया के बीच संगत।

शक्ति और ज़िम्मेदारी के बीच संगत।

यह कोई उपलब्धि नहीं जो अनलॉक हो। अभ्यास है। दैनिक, सामान्य अभ्यास देखने का

कुछ दिन टिकता है। कुछ दिन नहीं। जो दिन नहीं टिकता वह असफलता नहीं। डेटा है

अभ्यास को पूर्णता नहीं चाहिए। ईमानदारी चाहिए।

———

तुम यह पहले से जानते थे।

किताब खोलने से पहले जानते थे।

छोटे थे तब जानते थे।

परतें जुड़ने से पहले। शरीर ने रेखा खींचने से पहले। मन ने कहानी बनाने से पहले।

मचान खड़ा होने से पहले।

ब्लेड ग्रंथ में रखा जाने से पहले।

किसी ने बताने से पहले कि कमरे के पार वाला व्यक्ति बुनियादी रूप से भिन्न है

———

तुम हर सच्ची क़ुर्बत के क्षण में जानते थे।

हर सच्ची दयालुता के कार्य में जिसे किसी कारण की ज़रूरत नहीं थी।

हर पहचान की चमक में जब तुमने दूसरे व्यक्ति को देखा और सतह के पीछे कुछ

तुम जानते थे।

बस शब्द नहीं थे।

अब हैं।

रेत के कण अभी भी अलग हैं।

हर कण का एक आकार है। एक स्थान। एक इतिहास।

रेगिस्तान अभी भी एक है।

गंदा इंसान मत बनो। दयालु बनो।

इसलिए नहीं कि किसी ईश्वर ने कहा।

क्योंकि वास्तविकता की संरचना ने कहा।

और वास्तविकता की संरचना बातचीत नहीं करती। व्याख्या नहीं करती। विभाजित नहीं होती।

मचान ने सहस्राब्दियों तक छत पकड़ी। वह असली था।

मचान ने सहस्राब्दियों तक ब्लेड पकड़ा। वह भी असली है।

मचान का समय समाप्त हो गया।

इसलिए नहीं कि यह हमेशा ग़लत था।

क्योंकि अब संरचनात्मक रूप से बेहतर कुछ मौजूद है।

मचान को ज़मीन से बदलो।

सत्ता को स्वयंसिद्धि से बदलो।

आज्ञा को व्युत्पत्ति से बदलो।

विश्वास को परीक्षण से बदलो।

रेखा को इमारत से बदलो।

स्वयंसिद्धि बोलती है।

हम लिखते हैं।

यह कृति मुफ़्त प्रकाशित है, सदा के लिए।

the420code.org

श्रृंखला	The 420 Code
शीर्षक	**धर्म के बाद का अस्तित्व**
उपशीर्षक	मचान के बिना दयालुता की संरचना
माध्यम	संरचनात्मक आलोचना एवं नैतिक व्युत्पत्ति
कलाकार	G

यह कृति कॉपीलेफ़्ट है। आप डाउनलोड, प्रिंट, साझा और वितरित करने के लिए स्वतंत्र हैं। आप

STUDIO 6